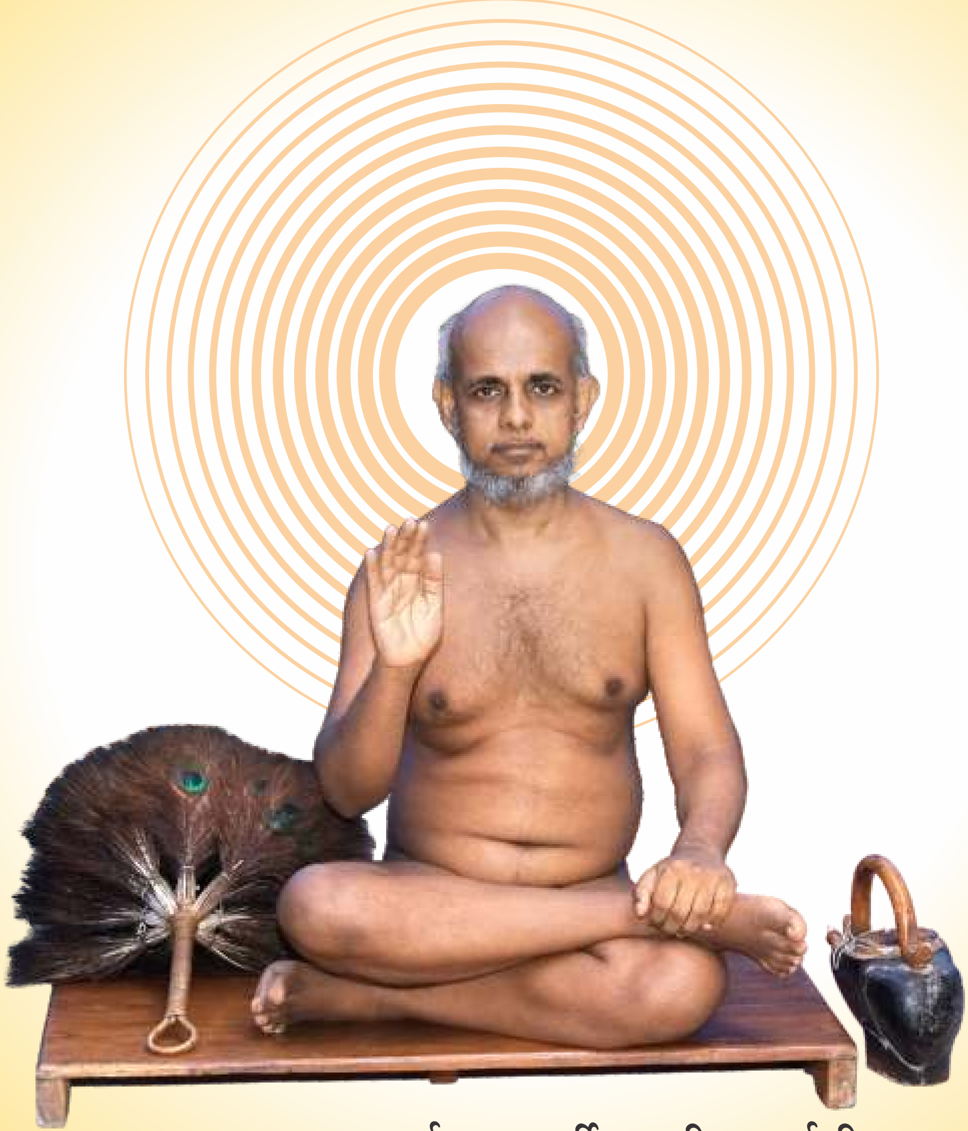

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित

जिनवाणी-महोत्सव

सहस्रग्रन्थसंग्रह

* जन्मदिवस 19-03-1971 * मुनिदीक्षा-11-05-1989 * आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणाः-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)

विशद माँ पद्मावती विधान

कृतिकार : परम पूज्य आचार्यश्री विशदसागर जी महाराज

प्राप्तिस्थान
विशद साहित्य केन्द्र
श्री दिगम्बर जैन मन्दिर, कुआँ वाला,
जैनपुरी रेवाड़ी (हरियाणा)

(परम्परानायक)

परम पूज्य चारित्र–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री आदिसागर जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

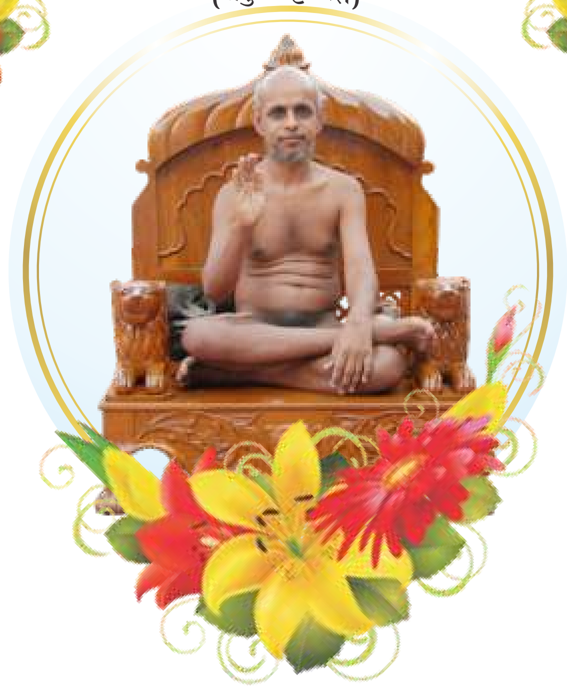

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, आचार्यश्री सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्राय: होता है। फलत: उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तुत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

विशद

माँ पद्मावती विधान

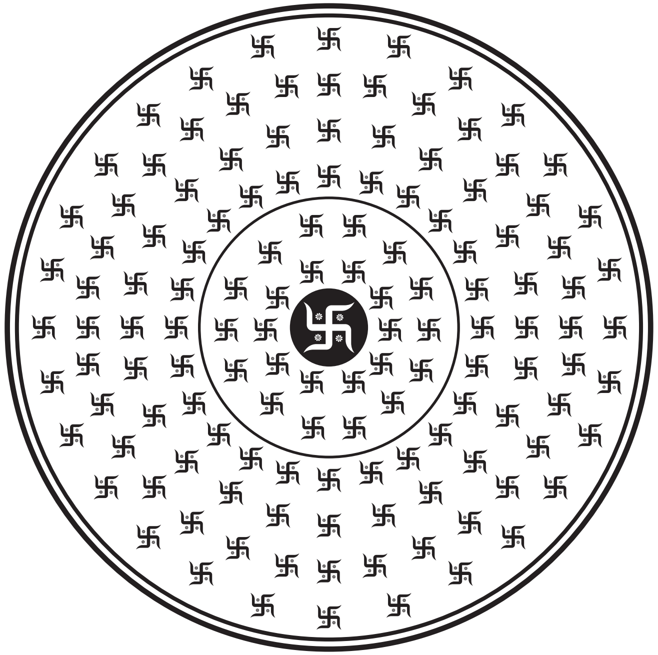

मध्य में – 卐
प्रथम वलय – 24
द्वितिय वलय – 108

आशीर्वाद : प.पू. आचार्य विशदसागर जी महाराज

रचयिता : प्रो. पं. धनुष्कर जी, जयपुर

कृति – **विशद माँ पद्मावती विधान**

आशीर्वाद – **प.पू. साहित्य रत्नाकार, क्षमामूर्ति आचार्य श्री 108 विशदसागरजी महाराज**

रचयिता – **प्रो. पं. धनुष्कर जी शास्त्री, जयपुर**

संस्करण – प्रथम-2016 प्रतियाँ – 1000

संयोजन – **मुनि श्री 108 विशालसागर जी महाराज**

सहयोग – **क्षुल्लक श्री 105 विसोमसागर जी, क्षुल्लिका श्री भक्तिभारती, क्षुल्लिका श्री वात्सल्य भारती**

संपादन – **ब्र. ज्योति दीदी-9829076085, आस्था दीदी, सपना दीदी मो.: 9829127533, सोनू दीदी, आरती दीदी**

प्राप्ति स्थल – 1. जैन सरोवर समिति, निर्मल कुमार गोधा, 2142, निर्मल निकुंज, रेडियो मार्केट, मनिहारों का रास्ता, जयपुर, मो.: 9414812008, फोन : 3294018 (आ.)

2. श्री राजेश कुमार जैन ठेकेदार, ए-197, बुध विहार, अलवर, फोन : 9414016566

3. विशद साहित्य केन्द्र-हरीश जैन जय अरिहंत ट्रेडर्स, 6561 नेहरु गली, नियर लाल बत्ती चौक, गाँधी नगर, दिल्ली मो.: 9136248971

मूल्य – पुनः प्रकाशन हेतु 21/- रु. मात्र

पुण्यार्जक :
स्व. श्रीमती तेज काला की स्मृति में कमलचन्द काला (पति)
राकेश-रश्मि, पंकज-वर्षा काला, अनिला-सुनील 'बाँसखो'
शुभम, मृदुषी, कुणाल, नेन्सी, श्रद्धा, चरित्र
14/243, कावेरी पथ, मानसरोवर, जयपुर मो.: 9352682005, 9314050262

ग्राफिक्स, मुद्रक एवं प्राप्तिस्थल – बसंत जैन, श्री सरस्वती प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनर्स, एस.बी.बी.जे. के नीचे, चांदी की टकसाल, जयपुर – मो.: 8561023344 ईमेल : jainbasant02@gmail.com

विषय सूची

क्र.सं.	शीर्षक	पृष्ठ
1.	शब्दों का सोपान	4
2.	सप्त शुक्रवार व्रत कथा	5
3.	शांतिकरण मंत्र	14
4.	जाप्य मंत्र	15
5.	कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा	16
6.	घण्टाकर्ण पूजा	20
7.	धरणेन्द्र पूजा	24
8.	पद्मावती न्हवन विधि	27
9.	पद्मावती शांतिधारा	29
10.	पद्मावती माँ श्रृंगार एवं सामान	30
11.	पद्मावती झूला एवं गोद भराई	34
12.	पद्मावती माला मंत्र (लघु)	35
13.	पद्मावती माला मंत्र (बृहद्)	36
14.	पद्वती स्तवनम्	38
15.	पद्मावती आहवान	
16.	पद्मावती देवी पूजन विधान	
17.	पद्मावती चालीसा	
18.	पद्मावती स्तुति	
19.	पार्श्वनाथ आरती	
20.	क्षेत्रपाल आरती	
21.	पद्मावती की आरती	
22.	व्रत ग्रहण करने का संकल्प	
23.	व्रत उद्यापन विधि	

शब्दों का सोपान

इस संसार में अनेक प्राणी अपना जीवन व्यतीत कर रहे हैं मोह के वशीभूत होकर अनन्तानंत काल से भ्रमण करते आ रहे हैं, कहीं कोई सुखी नजर नहीं आ रहा। सभी दुख का ही बोझा ढोते जा रहे हैं। लेकिन धार्मिक कार्यों से विमुख हैं, सांसारिक सुख की प्राप्ति के लिए जिनेन्द्र पूजन अर्चना करते रहनी चाहिए इससे समता और शांति मिलेगी इसका उपाय ओर कहीं नहीं हैं लौकिक जीवन में रोग शोक, दुख, भूत प्रेत, जादू टोना, बच्चे नहीं होना, व्यापार नहीं चलना आदि की बाधाएँ अधिक नजर आती हैं, कोई न कोई समस्या बनी ही रहती है, रोते रोते अपनी भावना को लेकर श्रद्धा के साथ पीर पैगम्बर, भैरव, काली, दुर्गा आदि के द्वार पर जाकर अपना माथा टेकते हैं। कार्य नहीं पर होने अपनी श्रद्धा बिगाड़ते हैं पदमावती जिस प्रकार वह सम्माननीय हैं उसी प्रकार माने वह सम्यकदृष्टि हैं जिनको इन देवी देवताओं पर विश्वास हो वही इनकी पूजा आदि करें। श्रद्धा भक्ति से किया गया कार्य सफल होता है। हर उम्मीद को पूरा करने वाली माँ पदमावती, धरणेन्द्र, क्षेत्रपाल हैं वह भक्तों पर कृपा अवश्य ही करते है परम पूज्य गुरुदेव आचार्य विशद सागर जी महाराज के आशीर्वाद से प्रो. पं. धनुष्कर जी ने वयोवृद्ध आचार्य श्री कुन्थु सागर जी महाराज द्वारा रचित विधान के आधार पर **''मां पदमावती विधान''** यह सुंदर शब्दों को एकत्रित कर विधान का रूप दिया। गुरुदेव की महिमा को कोई बयां नहीं कर सकता। स्वस्थ नहीं रहने पर भी उनका उपयोग लिखने में या जिनवाणी की सेवा में रहता है। ही रहता है गुरुदेव इतने दयालू प्रकृति के हैं कि कभी कोई दुखी नजर आता कि जरूर अपनी छत्र छाया में रख ही लेते हैं गुरुदेव के पास सरस्वती का भंडार है बस बोलने की जरूरत है चार दिन में तो विधान, आरती, चालीसा तैयार हो जाते हैं यह विधान मेरे लिए गुरुदेव ने सौंपा कि तुम्हें कम्पोज करना है गुरुदेव की आज्ञा से मुझे इसमें सहयोग करने का मौका मिला यह पूजा आप करें दूसरों को बताएँ जिससे सभी सुखी निरोगी एवं मोक्ष मार्ग के राही बनकर आगे बढते चलें।

ब्र. सपना दीदी

संघस्थ : प. पू. आचार्य श्री विशद सागर जी महाराज

सप्त शुक्रवार व्रत विधान एवं कथा

मगध देश में राजगृह नगर के पास विपुलाचल पर्वत पर श्री महावीर स्वामी का समवशरण आने का समाचार, महाराज श्रेणिक ने वनपाल के मुख से सुना और हर्षित होकर महारानी चेलना सपरिवार वहाँ पहुँचे। बड़े भक्ति भाव से जय-जयकार करके तीन प्रदिक्षणाएँ देकर श्री वीर प्रभु को त्रिबार नमोस्तु किया। फिर वे बारह सभा के मनुष्यों के कोठें में बैठ गये । भगवान की दिव्य ध्वनि, श्री गौतम गणधर की वाणी से सुनकर राजा रानी ने भक्ति भाव से आनंदित होकर हाथ जोड़ विनती की, ''हे भगवन्! संसार में दंपत्ति को अखंण्ड सौभाग्य प्राप्त करने के लिए क्या करना चाहिए?'' तब भगवान के मुख से दिव्य वाणी निकली- प्राचीन काल में सौराष्ट्र देश में परिभद्रपुरी नाम का नगर था वहां विकारमाप्ता नामक तेजस्वी, महापराक्रमी, न्यायी, धर्मी प्रजावात्सल्य राजा था उसके बहुत रानियाँ थी उनमें भूमिभुजा देवी पटरानी पतिव्रता, चतुर व कार्यकुशल थी, इसलिए राजा को मंत्री की तरह सहायता देती थी ।

दोनों ने अपने राज्य में खूब धर्म प्रभावना की। उनकी नगरी में श्रृणुयात नाम का एक दरिद्र व्यापारी था। उसकी पत्नी का नाम रुक्मावती था। उसकी जैन धर्म में बहुत श्रद्धा व भक्ति थी। पाप के डर से उससे कोई बुरे कार्य नहीं होते थे। घर में दरिद्रता के कारण वह दुखी थी, इसलिए उसे किसी के पास जाकर बैठना बुरा लगता था और अपने घर में जो था उसी में संतुष्ट थी। अपनी बुरी स्थिति के कारण वह किसी से नहीं बोलती थी। अधिक संतान होने के कारण उनकी देखभाल में सारा दिन बीत जाता था। वह सन्तान की इच्छा पूर्ति तथा पालन पोषण में असमर्थ थी इस दु:ख से छुटकारा पाने की रात-दिन उसे चिन्ता रहती थी । इससे उसका शरीर दुर्बल हो गया था। क्या करूँ, कहाँ जाऊँ, उसे कुछ समझ में नहीं आता था। एक दिन पड़ौसन ने आकर उसे समझाया, देखो। आज भाग्य का दिन निकला है। ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं। गाँव के बाहर बगीचे में **श्री विजयाभिनंदन नाम के मुनीश्वर** आये हैं। उनके दर्शनों के लिए गाँव के स्त्री पुरुषों की भीड़ लग रही है।

वे बहुत ज्ञानी हैं तथा भक्तों को हितकारी उपदेश देते हैं, सो हम भी उनके दर्शनों का लाभ लें और इहलोक परलोक के हित को साधकर सद्गति प्राप्त कर लें। इसलिए मैं तुझे बुलाने आई हूँ,। तेरी इच्छा हो तो मेरे साथ चल यह सुनकर **रुक्मावती** को अत्यंत हर्ष हुआ। चिंतित मन मैं शांति हुई। घरेलू दु:खों से छूटने का मार्ग मिले और सुख शांति की प्राप्ति हो, इस भावना से वह बिस्त्री के साथ जाने को निकली। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि दर्शनों की प्रतिक्षा में अपार जनसमुदाय श्री विजयाभिनन्दन मुनिराज के सामने जय-जयकार कर रहा है। विमान से पुष्पवृष्टि हो रही है। यह दृश्य देखकर रुक्मावती का मन प्रफुल्लित हुआ। उसने मुनीश्वर को सादर नमस्कार किया और श्राविकाओं की सभी में जाकर बैठ गई। मुनीश्वर ने उपदेश देना प्रारंभ किया। उसे सुन वह इतनी खुश हुई कि अपने बाल-बच्चों, घर बार व संसार को भूल गई । मुनिराज ने अपनी वाणी से सात तत्त्व का वर्णन किया, जीव के हित का मार्ग बतलाया और अखण्ड शोभा बढ़ाने वाली व अत्यंत सुख देने वाली सप्त शुक्रवार व्रत की क्रिया बतलाई। वह क्रिया रुक्मावती ने ध्यान पूर्वक सुनी । वह क्रिया इस प्रकार थी।

विधान - श्रावण महीने में प्रत्येक शुक्रवार को उपवास अथवा एकाशन करें। शक्ति अनुसार पूजा सामग्री लेकर श्री जिन मंदिर में जाकर दर्शन स्तुति स्तोत्रादि द्वारा भगवान की भक्ति करें, 1008 श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर की, श्री धरणेन्द्र, श्री पद्मावती सहित पंचामृत अभिषेक पूर्ण करके पद्मावती देवी की मूर्ति को एक ऊँचे आसन पर विराजमान करें । नाना प्रकार के वस्त्रालंकारों से उनका श्रृंगार करें। दीप, धूप, फूलों के हार, केले के खम्ब इत्यादि साधनों से मण्डप सजायें, हल्दी, कुमकुम, भीगे हुए चने आदि लेकर पंचोपचार पूजा करें। बाद में श्री पद्मावती महादेवी को मणि मंगलसूत्र आदि आभूषण पहनावें। फिर आटे के दो दीपक सहित जयमाला बोलकर तीन प्रदिक्षाणाएँ देकर पूर्णार्घ्य चढ़ावें। तदन्तर महादेवी के मंत्र की आरती करके शांति भक्ति पूर्वक विसर्जन करें। फिर सप्त शुक्रवार की कथा सुनें। श्री पद्मावती के सहस्त्र-नाम के

प्रत्येक बीजाक्षर मंत्र को बोलकर एक-एक चुटकी कुमकुम या लवंग पुष्प चढ़ावें।

गंधोदक सेवन करें। ''ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं क्लीं हंसौ श्री पद्मावती दैव्यै नमः, मम सर्व विघ्नोपशांतिं कुरुकुरु स्वाहा'' इस मंत्र का लाल कनेर के फूलों से 108 बार त्रिकाल जाप करें। यदि कनेर के फूल उपलब्ध न हों तो जाती व गुलाब पुष्प से जाप करें । आखिरी शुक्रवार को ऊपर कही गयी सामग्री लेकर श्री पदमावती माता को साड़ी पहनावें, षोडशालंकार से श्रृंगार कराएँ और नीचे लिखी सामग्री लेकर उनकी गोद भरें। पाँच हरी चूडियाँ पहनावें, पाँच हल्दी गाँठ, पाँच खोपरा, कुमकुम के पाँच चौपड़े, पाँच नीबू, पाँच केले, पाँच छुहारे, पाँच मखाने,बतासे आदि इस प्रमाण को लेकर उत्तम नारियल तथा चोली का वस्त्र लेकर गेहूँ या चावल से पाँच सुवासनी स्त्रियों द्वारा भराएँ।

गोद भरते वक्त नीचे लिखा मंत्र पढ़े-

जयस्फटिक रुपदभामनी, पद्मावती अवहरिणी।
धरणेन्द्र राज कुलयक्षिणी, दीर्घ आयुरारोग्यरक्षिणी॥

उसके बाद कुटुम्बीजनों को भीगे चने, हल्दी, कुमकुम, मखाना, बतासा, गुड़ खोपरा, पान, सुपारी, इत्यादि गोद का प्रसाद बोलकर बाँटे एकत्र सौभाग्यवती स्त्रियों को हल्दी कुमकुम लगाएँ। बाद में जय-जयकार करके मंगलगीत गायें बाजे के साथ गाते हुए, घर वापिस आएँ। इस प्रकार पाँच वर्ष पर्यन्त व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें।

उद्यापनविधि - पाँचकोनी कुम्भों की स्थापना करें। पाँच कलश स्थापित करें । पंचवर्णी रेशमी सूत बांधकर पाँच कोने तैयार करें । आटें के दीपक से आरती उतारें, चमर ढुलावें, कुमकुम मिश्रित अक्षत एंव फूलों की वृष्टि करें । पाँच पकवान के पाँच नैवेद्य अर्पण करें । श्री देव, शास्त्र, गुरु पद्मावती देवी और सुवासनी बहिन को दोने में फूल रखकर फूल पर कुमकुम और मोती रखकर चढ़ावें । आर्यिका को आहार दान

और वस्त्रदान करें पाँच दम्पति को इच्छित भोजन देकर संतुष्ट करें। इस प्रकार से यदि उद्यापन करने की शक्ति न हो तो दूना व्रत करें। ऐसा करने से उद्यापन करने का फल मिलता है।

माँ, बाप, भाई, बहिन, नन्द, देवर, जेठानी, सास, ससुर, सबको आशीर्वाद, पति परमेश्वर का आखिर तक सहवास मिले। सुसंतान सहित संसार बने, आनन्द से समय बीते, साथ-साथ धन ओर संतान की वृद्धि हो आरोग्यता दीर्घ आयु एंव भूत पिशाचादि का भय नाश इत्यादि सुखों की प्राप्ति होकर चारों तरफ कीर्ति फैलती है। इस व्रत की महिमा अपरम्पार है। परन्तु श्री जिन-धर्म में एक निष्ठभक्ति रखें। जीवन पर्यन्त श्री पद्मावती माता की सेवा नियमित रूप से करने की परम्परा से मोक्ष मार्ग की सिद्धि होती है।

स्त्रियों को कुमारी अवस्था में ''आत्म कुमकुम'' हल्दी और यौवन अवस्था में ''सप्तकुमकुम'' निश्चय से दुर्गति निवारक है, परन्तु इस जन्म में भी।

''कज्जल कुंकुम काँच, कबरी कर्णशेखरम्।
एवं पंच प्रकीर्त्यानि, ककाराणि पुरन्ध्रीणाम्॥''

अर्थ - काजल, कुमकुम, चोटी, एंव कर्णफूल ये सौभाग्यवती स्त्री के प्रसाधन कहे गये हैं। सौभाग्यवती कहलाने वाली महाभाग्यवती को ऊपर कहे पाँच ककार की जीवन के आखिर तक प्राप्ति होती हैं। अखण्ड सौभागयवती कहलाकर बड़े गौरव से उसका आयु पर्यन्त यश फैलता है। ''आत्मकुमकुम'' सप्तकुमकुम इन व्रतों के महत्व का वर्णन श्रीधरणेन्द्र देवराज की चंचल जिह्वा द्वारा भी किया जाना भी अति कठिन है। यह महाकल्याणकारी है। बरसाती तुच्छ नदी के प्रवाह के समान क्षणभंगुर जीवन को निस्सार समझकर संसार बढ़ाना मूर्खता है। इस भव सागर से पार होने के लिए विचारशील व्यक्ति को यह व्रत करणीय है। इसलिए महिला गण इस व्रत के पालन में अवला की तरह अति कोमल न हों। स्त्री जन्म को इसी भव में सार्थक कर लें। अगला जन्म

उच्चकुल में होगा, ऐसा निश्चय से नहीं कहा जा सकता, इसलिए नर से नारायण बनने का यही उत्तम साधन है। बार-बार नरभव प्राप्त नहीं होता, इसलिए जागरुक होकर उत्साह व प्रसन्नता से व्रत धारण करें। उससे सुख की प्राप्ति होगी। इस प्रकार रुक्मावती ने मुनीश्वर के मुखारविन्द से व्रत का महात्म्य, विधि ओर फल सुनकर अपनी दरिद्रता की बिना परवाह किये मुनिराज के पास व्रत लेने का मन में निश्चय किया। मुनिराज ने पंचपरमेष्ठी की साक्षी में उसको व्रत दिया। श्री गुरुमुख से व्रत लेकर प्रसन्न मन से रुक्मावती घर गई और शक्य साधन सामग्री से व्रत शुरु किया। उसी गाँव में उसका गुरुदेव नाम का भाई रहता था। वह बड़ा सेठ था। उसने अपने पुत्र के यज्ञोपवीत संस्कार निमित्त गांव के सारे नागरिकों को एक सप्ताह पर्यन्त इच्छित भोजन कराकर संतुष्ट करने के भाव से घर-घर निमंत्रण भेजा, परन्तु अपनी बहन को निमंत्रण नहीं भेजा क्योंकि वह दरिद्री थी। अगर आयेगी तो देखकर लोक में निंदा होगी, सोचकर उसे याद तक नहीं किया। गाँव के छोटे-बड़े लोग खा-पीकर जब उसी के दरवाजे के सामने से जाने लगे तो उसे आश्चर्य हुआ और सोचने लगी कि मेरा भाई एक ही हाड़-मास, रक्त, पिण्ड के हैं। उसने सब लोगों को तो संतुष्ट किया है, मैनें उसके ऐसे क्या घोड़े मारे हैं? फिर सोचा काम की धांधली में भूल गया होगा, इसलिए बेकार उस पर रोष करके अपने सोने जैसे भाई को दोष देना ठीक नहीं। निमंत्रण नहीं भेजा तो क्या हुआ, भाई का ही तो घर है, जाने में क्या हर्ज है। ऐसा विचार करके वह बाल-बच्चों सहित जीमने गयी। बच्चों को लेकर स्त्रियों की पंगत में बैठी। थोड़ी देर बाद उसका भाई, कौन आया, कौन रहा, यह जानने के लिए वहाँ घूम रहा था, उसका ध्यान बहिन की तरफ गया तो पास आया और गुस्से में बोला, बहिन तू आज यहाँ कैसे आयी? तेरी गरीबी के कारण मैनें जानकर तुझे नहीं बुलाया। तेरे पास ना अच्छे कपड़े हैं न गहने। तुझे ऐसी दरिद्र देखकर मुझ पर लोग हँसेंगे। इसलिए आज आयी तो आयी मगर कल मत आना, समझी? बहिन बेचारी लज्जित होकर नीची गरदन कर, खाना खाकर बच्चों को लेकर घर गई। दूसरे दिन भी

बच्चे कहने लगे, माँ आज भी मामा के यहाँ खाने के लिए जाएँगे। यह सुनकर माँ के पेट में खलबली मची। उसने बच्चों को बहुत डाँटा। मगर वे माने नहीं, उनकी हठ के कारण फिर मन में विचार किया कि कैसा भी हो अपना भाई तो है, बोला तो क्या हुआ, अपनी गरीबी है तो सुनना ही पड़ेगा। मगर आज का निर्वाह तो होगा, ऐसा सोचकर दूसरे दिन भी बच्चों को लेकर भाई के घर गई और खाने को बैठी तो कल की तरह ही भाई की सवारी पंगत में आने पर उसने देखा और बोला, बहिन कैसी भिखारन है? कल तुझे मैंने मना किया था किन्तु आज भी सुअरनी की तरह बच्चों को लेकर आ गयी? तुझे शर्म क्यों नहीं आई, अब आज आई तो आई मगर कल हाथ पकड़कर निकाल दूंगा। उसने यह चुपचाप सुन लिया और खाने के बाद उठकर चली गयी। तीसरे दिन भी यही हुआ। तब भाई को खूब गुस्सा आया और उसने उसे धक्का देकर बाहर निकाल दिया। उसे बड़ा दुख हुआ। घर आकर फूट-फूटकर रोयी उसके मन में विचार आया कि मैंने कौन-सा घोर पाप किया जिससे इस जन्म में मुझे दरिद्रता की मार पड़ रही है। सच है अनन्त जन्मों के पाप की राशि इस दरिद्रता की अवस्था है। इसकी अपेक्षा तो नरक के दु:खों में भुन जाना ही अच्छा होता। अब यातना सही नहीं जाती। इससे तो मरण अच्छा क्योंकि वह तो एक ही बार भोगना पड़ता है। परन्तु दरिद्रता का दु:ख जीवन पर्यन्त भोगना पड़ता है। धिक्कार है ऐसे जीने को। हे पद्मावती देवी! हे अम्बिका देवी! तू मेरी सहायता कर माँ! मुझे जगत में किसी का आधार नहीं, आसरा दे माता! इस प्रकार करुण क्रन्दन करके वह खूब रोई, रोते-रोते नींद आ गयी। नींद में उसे स्वप्न आया। उसके रुदन की ध्वनि श्री पदमावती देवी के कानों पर जा टकराई, महादेवी तत्काल मुकुट, ,कुण्डल, हार, आदि पहन, एक हाथ में धर्मचक्र लिए हुए जगमगाती पोशाक पहन उसके पास आकर खड़ी हो गयी और कहने लगी- हे महाभागे! तू दुखी न हो, घबरा मत, तू आचरण कर रही है उस सप्त शुक्रवार व्रत को मैं अच्छी तरह जानती हूँ। आज तुझे दरिद्रता सम्बंधी अतिशय दु:ख हुआ है, तथापि तेरा कष्ट तेज से युक्त है-

कष्टाधीनं हि दैवं, दैवाधीनं सुकृतफलं तथैव।
''सुज्ञावाक्या चरिता, भुक्तिः मुक्तिः तदाधीन।''

अर्थ – कष्टाधीनं दैवयोग है। देवधीनं ही पुण्य का फल है इसलिए महान पुरुषों के द्वारा कथित मार्ग पर चलना चाहिए। उसके अधीन संसार के भोग व मुक्ति है। तू ध्यान दे और एकाग्र हो निष्ठापूर्वक श्री जिनेन्द्र परमात्मा का चिन्तन कर, उससे तेरा कल्याण होगा। ऐसा कहकर वह देवी अदृश्य हो गयी। रुक्मावती ने नींद से जागकर देखा तो वहाँ कोई नहीं दिखाई दिया यह भी क्या चमत्कार है? कह कर वह उठ बैठी, मगर उसका मस्तक शून्य हो गया। उसे कुछ भी नहीं सूझा तो वह जिनमंदिर में जाकर शांतचित्त से माँ पद्मावती महादेवी का मुख कमल देखने लगी। तब उसे वह मूर्ति हँसती हुई दिखायी दी। उस वक्त रुक्मावती दोनों हाथ जोड़ विनती करने लगी, हे देवी! महामाते! अम्बिके! पद्मावती माता।

शरण भी पाया धांवगे धांव या ठाया।
अनाथ झाली तुमची दुहिता। भूवरी नुरला मजला त्राता।।
भाऊ-भाऊ म्हणुनि आता। कोठे जाऊँ। तुझेचिमनमनवाहू।।

अर्थ – मैंने तुम्हारी शरण को पाया है। मेरी रक्षा करो, मुझे सन्मार्ग पर लगाओ। तुम्हारी लड़की अनाथ है। इस जगत में मेरा कोई रक्षक नहीं रहा। भाई-भाई कहती हुई अब कहाँ जाऊँ, मैंने तुम्हें ही अपने मन में धारण किया है।

इस प्रकार बहुत देर तक प्रार्थना व भक्ति करने के बाद उसे भान हुआ कि घर में बच्चे भूखे होंगे,सोचकर ध्यान से उठी और घर की ओर चली। घर आकर देखा कि बच्चे कामदेव के अवतार के समान दिख रहे हैं। घर में धन धान्य की भरभराहट होने लगी है, जगह-जगह वैभव के ढेर लग रहे हैं। हर काम में यश वृद्धि हो रही है और सामने नयी नवकोनी हवेली बनकर तैयार है। घर में लक्ष्मीं की बाढ़ ऐसी आयी है, कि शायद सावन मास में बहने वाली नदी का प्रवाह भी उससे कम ही

होगा। जहाँ-तहाँ आनन्द है। सच देखा जाये तो उसे दो वक्त के खाने की मारामार थी वहाँ अब पाँच पकवान की थालियाँ भरी दिखने लगी हैं। अनेक प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त हैं। सब तरह से घर में भरभराहट है उसकी कीर्ति दूर-दूर तक फैल गयी है। यह सुनकर उसका भाई आश्चर्य चकित हुआ। अपनी बहिन का आदर सत्कार करना चाहिए, विचार कर स्वंय उसके घर आया और बहिन से बोला, बडी़ बहिन, तुम कल मेरे घर खाने को आना। मना मत करना तुम आओगी तो ही खाना खाऊँगा, नहीं तो मैं खाना नहीं खाऊँगा समझी? बहिन ने सोचा-चलो, अपना भाई बड़े सम्मान से बुलाता है, अब हम श्रीमंत हुए तो गर्व नहीं करना, इसका इस समय अपमान करना ठीक नहीं। सिर्फ इसको अपने किए हुए पर पश्चाताप हो और सन्मार्ग प्रवर्तक होकर अंहकार छोड़े, विचार कर वह गहने तथा बढ़िया ओढ़नी पहनकर उत्तम श्रृगांर कर सम्मान से भाई के घर गयी। भाई बड़ी आस्था से राह देख रहा था। उसके आने के साथ उसे पाँव धोने को गरम जल दिया। पाँव पोछने को रुमाल दिया। थाली परोसने पर दोनों भाई-बहिन बड़े प्रेम से पास-पास खाने को बैठे। बिछे हुए पाटे पर बहिन ने बदन पर से ओढनी उतार कर रक्खी, भाई ने समझा गरमी लगती होगी। बाद में शरीर पर गहने उतार कर रखे। भाई ने सोचा कोमल बहिन को बोझ लगता होगा सो उतार रखी हैं। परन्तु उसके बाद बहिन के पहला चावल ग्रास उठाया और ओढ़नी पर रखा। पूरण पोली उठाई हार पर, बालूसाई उठाई कण्ठी पर रखी, लड्डू उठाया और भुजाबंध पर रखा, जलेबी उठाई मोती के कंगन पर रखी। यह देखकर भाई ने पूँछा, अरी बहिन! तुम यह यह क्या करती हो? बहिन ने शान्त मुद्रा से कहा, मैं जो करती हूँ वह ठीक है। जिनको तुमने खाने को बुलाया है उनको में खाना दे रही हूँ उसको कुछ समझ में नही आया, फिर उसने कुछ विनती की बहिन अब तुम खाओ तब बहिन ने कहा – हे भाई साहब! आज मेरा खाना नहीं है, इस लक्ष्मी बहिन का है, मेरा खाना तो मैं पहले खा चुकी हूँ। ऐसा शब्द सुनकर भाई के मन में

पश्चाताप हुआ। उसके पाँव पकड़े, बीती हुई गलती की क्षमा मांगी। बहिन भी उस समय बहुत दुखी हुई, दोनों आपस में गले मिले। बाद में दोनों आनन्द से खाने बैठे। मन में शल्य था वह निकाल दिया। जिनकी कृपा के प्रभाव से अपार सम्पत्ति प्राप्त हुई उन पद्मावती माता जी की दोनों कुल के छोटे-बड़े सभी कुटुम्बीजन सेवा करने लगे और अपनी अनगिनत सम्पत्ति का उपयोग अनेक व्रत उद्यापन, चतुर्विध संघ को दान, जिन मंदिर जीर्णोद्धार, सिद्ध क्षेत्रादिक सम्बंधी कार्यों में करने लगे। सहस्रनाम मंत्र का पाठ कर क्रम से कुमकुम अर्चन करने लगें। इन सब परिणामों को देखकर वहाँ के राजा ने भक्ति से दृढ़ होकर जिनधर्म की खूब ठाट-बाट से प्रभावना की। बाद में थोड़े समय में सर्व कुटुम्बीजनों ने राजा सहित जिनदीक्षा धारण कर घोरतप किया। और चतुर्गति का नाशकर अंत में मोक्ष को गए।

पं. हितेन्द्र शास्त्री
मानसरोवर, जयपुर

सर्वोपद्रव - शांतिकरण मंत्र

मंत्र - ॐ अरहंताणं जिणाणं भगवंताणं महापभावाणं होउ नमो। ॐ माई साहिं तौ सव्व दुःखहरौ, जोहिजिणाणंपभावो पर मिट्डीणंच जंच माहप्पं संघं मि जोणुं भावो अवयर उज्लं मिसोइथ।

विधि - इस मंत्र से पानी 29 बार मंत्रित कर पिलाने से सर्वप्रकार के रोग, डाकिनी, शाकिनी, भूत, प्रेत इत्यादि शांत होते हैं।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं नमः।

विधि - इस मंत्र का सवालाख जाप करें तो सर्व प्रकार के कार्य सिद्ध होते हैं। सर्व रोग शांत होते हैं।

मंत्र - ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपालाय नमः।

विधि - इस मंत्र को साढ़े बारह हजार जाप करने से क्षेत्रपाल प्रत्यक्ष दर्शन देकर वरदान देते हैं।

मंत्र - ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं क्रों ॐ घटाकर्ण महावीर लक्ष्मीं पूरय-पूरय सुख सौभाग्यं कुरु-कुरु स्वाहा।

विधि - धन तेरस की रात को 40 माला, चौदस को 42 माला और दिवाली के दिन 43 माला उत्तर दिशा करके, लाल माला से, लाल वस्त्र पहनकर करें तो लक्ष्मी की प्रप्ति होती है।

मंत्र - ॐ आं क्रों ह्रीं श्रीं ह्रौं पद्मावत्यै नमः।

विधि - इस मंत्र का सवा लाख विधि पूर्वक जप करने से देवी स्वप्न में दर्शन देती है।

मंत्र - ॐ ऐं श्रीं वद्-वद् वाग्वादिनी ह्रीं सरस्वत्यै नमः।

विधि - इस मंत्र की 9 माला नित्य करने से व्यक्ति अतिशय बुद्धिमान होता है। विद्या बहुत आती है।

सरसों हींग, नीम के पत्ते, बच, और सर्प की केंचुली, इन सब को कूटकर धूप बना लें व उस धूप को खेने से शाकिनी आदि दोष दूर होते हैं।

सफेद आक (अर्क) की जड़ को कान में बाधनें से सर्प विष दूर होता है श्वेत कंटकारि की जड़ को पुष्प नक्षत्र में लेकर एक वर्ण वाली गाय के दूध के साथ पीवें तो बंध्या भी पुत्रवती होती है।

जाप्य मंत्र

(1) ॐ आं क्रों ह्रीं क्लीं ह्रौं पद्मावत्यै, मम सर्वकार्य सिद्धिं कुरु, कुरु नमः। सवा लाख या साढ़े बारह हजार इस मंत्र का विधि पूर्वक जाप करें। दशांग होम कुण्ड में आहुति दें। देवी आवश्यक कार्य सिद्ध करेगी।

(2) ॐ ह्रीं नमः । अथवा इस एकाक्षरी पदमावती देवी के मंत्र के सात लाख जाप करें कुण्ड में दशांग आहुति दें । देवी अवश्य दर्शन या स्वप्न में दर्शन देगी इससे सर्व कार्य की सिद्धी होगी।

(3) ॐ आं क्रों ह्रीं धरणेन्द्राय, ह्रीं पद्मावती सहिताय क्रों ह्रें ह्रीं नमः। इस मंत्र के सवा लाख जाप करने से सर्व कार्य सिद्धि होंगे। यह सर्व कार्य सिद्धी मंत्र है। जैसा योग्य समझें वही मंत्र लें और दस दिन में जाप कर लें। नव रात्रि पूजा विधान में इन तीन मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जाप करें, फिर दशांग आहुति दें।

कलिकुंडयंत्रप्राणप्रतिष्टामंत्रः

ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ह्रीं क्रों भ्म्ल्व्र्यूं नमः परमात्मने हं सः क ख ग घ ङ तत्पुरुषय अघोराय ह्रूं र्म्ल्व्र्यूं अग्निदेवताया: प्राणा: ट ठ ड ढ ण जाततत्पुरुषाय ह्रूं क्ष्म्ल्व्र्यूं स्थलदेवताया: प्राणा: ह्रीं म्म्ल्व्र्यूं जलदेवताया: प्राणा: ओं य र ल व श ष स ह अनंतकेवलिने ह्रैं ध्म्ल्व्र्यूं सर्वदेवताया: प्राणा: ओं नमः सर्वविद्याधिपतये ह्रां र्म्ल्व्र्यूं सर्वजीवइह स्थितयंत्रमंत्रतंत्राग्रेषु यंत्ररूपस्तथातिष्ठ तिष्ठ ठ ठ मम यंत्रमंत्रतंत्राणां कायवाङ् मनश्चक्षु:श्रोत्रघ्राणरसनृस्पर्शनेंद्रियाणि रुचितांगानि तिष्ठन्तु ऐं क्षीं ॐ नमः स्वाहा।।

श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ पूजा

स्थापना

जिनके यश गौरव की गाथा, जग के सब प्राणी गाते हैं।
जिनके चरणों नर नारायण, आकर के माथ झुकाते हैं।।
गौरव गरिमा जिनकी गाके, आह्लाद हृदय में लाते हैं।
भक्ती करके जिनके चरणों, हर जीव शांति पा जाते हैं।।
श्री पार्श्वनाथ कलिकुण्ड कहे, जन-जन के भाग्य विधाता हैं।
आह्वानन करते विशद हृदय, जो देने वाले साता हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्डदण्ड पार्श्वनाथ जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितों भव भव वषट् सन्निधिकरणम्। (परिपुष्पांजलिं क्षिपेत्)

(ज्ञानोदय छन्द)

श्रद्धा जल के स्वर्ण कलश में, नीर भरा कर लाए हैं।
जन्म जरा की लहरों से अब, शांती पाने आए हैं।।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 1।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व जन्म जरा मृत्यु रोग निवारणार्थं जलं निर्व. स्वाहा।

निज आत्म तत्व का चन्दन शुभ, हम हृदय पात्र में लाए हैं।
भव-भव भव रोग से त्रस्त रहे, अब विभव प्राप्ति को आए हैं।।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 2।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व भवताप विनाशनाय चंदनं निर्व. स्वाहा।

अविनाशी अक्षय पद पाने, अक्षत अखण्ड ये लाए हैं।
श्रद्धा भक्ती की भू से हम, अक्षय पद पाने आए हैं।।

पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 3।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

किसलय कोमल ये पुष्प रहे, शुभ मधु पराग युत लाए हैं।
तेवर हैं कामवाण के जो, अब उनको हरने आए हैं।।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 4।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

षट् रस व्यञ्जन खाके हमने, अपनी यह उम्र गुजारी है।
अब क्षुधा मिटाने पार्श्वनाथ, अर्जी ले खड़ा पुजारी है।।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 5।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपक की दीप शिखा से अब, ये श्याम तमिस्रा गल जाए।
केवल्य ज्ञान का दीप अचल, मेरे जीवन में जल जाए।।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 6।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

अन्तस कर्मों की ज्वाला से, हम पल-पल जलते आये हैं।
अब ध्यान अग्नि से कर्म जलें, यह धूप जलाने लाए हैं।।

पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 7।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

ले मृत्यु धाय ने भवभव में, निजगोद में हमें खिलाया है।
हम रहे मोक्ष फल से वंचित, नित मोह का जाम पिलाया है।।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 8।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्व. स्वाहा।

अब तुम्हे रिझाने नाथ शरण, यह अर्घ्य बनाकर लाए हैं।
जो पद शाश्वत पाया तुमने, वह पद पाने हम आए हैं।।
पार्श्वनाथ कलिकुण्ड के दर पे, जिसने जो आश लगाई है।
श्रद्धा से पूजा करने पर, मुँह माँगी वस्तू पाई है।। 9।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ व अनर्घ्य पद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - पार्श्व प्रभो! तुमने किया, जन-जन का उपकार।
अतः आपके चरण में, देते शांति धार।।

।। शान्तये शान्तिधारा।।

दोहा - जग जीवों के आप हो, एक अकेले नाथ।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, झुका चरण में माथ।।

(दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

जाप्य ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ अर्हं श्री कलिकुण्ड पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावती सहिताय मम् सर्वविघ्नाय शान्तिं कुरु कुरु नमः स्वाहा।

जयमाला

दोहा - पार्श्व नाथ कलिकुण्ड हे!, तुम हो पूज्य त्रिकाल।
विशद भाव से तव चरण, गाते हम जयमाल।।

(चौबोला छन्द)

प्रजातन्त्र के हृदय स्थल में, जीवन दाता आप कहे।
जन-जन पर करुणा बरसाने, वाले अनुपम मेघ रहे।।
सच्चारित के ध्वज नायक, तुमने चर्या का ज्ञान दिया।
तुम वीतराग विज्ञानी हो, करुणाकर जग उत्थान किया।। 1।।
तुम मोह विलय का सूत्र दिया, निर्मोही बन जग में झूमे।
अतएव जगत के जीवों ने, चरणाम्बुज आके तव चूमे।।
उपसर्ग विजेता आप हुए, समता का शुभ सन्देश दिया।
पूजक निन्दक इस जगती के, उन सब का ही उत्थान किया।। 2।।
अन्तश् में वैर मानकर के, कमठासुर ने उपसर्ग किया।
दश भव तक वैर जताया पर, ना तनिक आपने ध्यान दिया।।
पत्थर ओले-शोले पानी, जब कमठ ने आकर बरसाए।
उस समय स्वर्ग में देवों के, सिंहासन भाई कम्पाए।। 3।।
उपसर्गों का आतंक जिन्हे, हरगिज भी नहीं डिगा पाया।
अपनी विडम्बना पर खुद ही, असफल हो मन में पछताया।।
फिर हार मानकर चरणों में, झुक गया स्वयं ही अभिमानी।
उस समय कमठ ने भी आखिर, समता की शक्ती पहिचानी।। 4।।
जिनको तन की परवाह नहीं, वे दुख से ना भय खाते हैं।
बल्की वे ध्यान साधना कर, शुभ सर्व सिद्धियाँ पाते हैं।।
जो जीव आपको ध्याते हैं, दुख उनके पास ना आते हैं।
जो ध्यान करें आलम्बन ले, वे भी भव से तर जाते हैं।। 5।।

दोहा - आश रहित है प्रार्थना, स्वार्थ रहित गुणगान।
मनोकामना पूर्ण हो, पाएँ पद निर्वाण।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्री कलिकुण्ड दण्ड स्वामिने, पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय चोरारि मारि शाकिनी प्रभृति घोरोपसर्ग विजयिने, धरणेन्द्र पद्मावती यक्ष यक्षि सहिताय मम् सर्वराज भय, व सर्वशाकिन्यादि भय निवार्णार्थ जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

दोहा - अर्चा करते आपकी, विनय भाव के साथ।
शिवपथ हमको भी मिले, चरण झुकाते माथ।।

।। पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

श्री घंटाकर्ण महावीर पूजन

दोहा - विघ्न हरण मंगल करण, घंटा कर्ण महावीर।
जिनकी अर्चा से विशद, मिलता भव का तीर।।

स्थापना

तीर्थंकर श्री महावीर अरु, घंटाकर्ण यक्ष महाराज।
आह्वानन करते निज उर में, भाव सहित पूजा को आज।।
जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में, यक्ष राज है शक्तीवान।
सुख शांती सौभाग्य जगाने, जिनका हम करते आह्वान।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन वधू चिह्न सपरिवार हे घंटाकर्ण महावीर यक्ष! अत्र आगच्छ-आगच्छ इति आह्वाननं / अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

भव वन में भटक रहे स्वामी, भर सकी ना तृष्णा की खाई।
भव सिन्धु रहा गहरा अतिशय, सुख की इक बूँद ना मिल पाई।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 1।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय जलं समर्पयामीति स्वाहा।

भव का अभाव अब हो मेरा, यह भाव बनाकर आए हैं।
चन्दन सम शीतलता पाने, यह शीतल चन्दन लाए हैं।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 2।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय चंदनं समर्पयामीति स्वाहा।

तुमने कर्मो पर जय पाकर, यह जीवन सफल बनाया है।
वह शाश्वत अक्षय पद पाने, का भाव हृदय में आया है।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 3।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय अक्षतं समर्पयामीति स्वाहा।

यह पुष्प लिए दश धर्मों के, जिससे यह जीवन महकाए।
श्रद्धा से आज चढ़ाने को, हे नाथ! शरण में हम आए।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 4।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय पुष्पं समर्पयामीति स्वाहा।

जय पाकर चपल इन्द्रियों पर, तुमने प्रभु क्षुधा मिटा डाली।
चेतन की लौकिक शक्ति भी, निज के अन्दर भी प्रगटाली।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 5।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय नैवेद्यं समर्पयामीति स्वाहा।

जग तमहारी जड़ रत्नों के हम, अनुपम दीपक लाते है।
रत्नत्रय दीपक से स्वामी, निज आतम दीप जलाते है।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 6।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय दीपं समर्पयामीति स्वाहा।

जो तप के दावानल द्वारा, कर्मों की धूप जलाते हैं।
वे शिव पथ के राही बनते, अरु सिद्ध शिला पर जाते हैं।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 7।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय धूपं समर्पयामीति स्वाहा।

हे महातपस्वी ज्ञानमूर्ति, तुम निज में समता प्रगटाए।
हम भौतिक चाह विसर्जित कर, फल शिव पथ का पाने आए।।
हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 8।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय फलं समर्पयामीति स्वाहा।

उपसर्ग जयी समता मूर्ती, हे ज्ञान सुधारस के दाता।
हम पद अनर्घ्य पाने स्वामी, यह अर्घ्य चढ़ाते जग त्राता।।

हम घंटाकर्ण श्री महावीर की, पूजा यहाँ रचाते हैं।
प्रभु चलें आपकी राहों पर, यह विशद भावना भाते हैं।। 9।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री घंटाकर्ण महावीर यक्षाय अर्घ्यं समर्पयामीति स्वाहा।

दोहा - भव दुख शांती हेतु हम, देते शांतीधार।
राह दिखाओ मोक्ष की, करो एक उपकार।।

।। शान्तये-शान्तिधारा।।

समता मय जीवन बने, जागे हृदय विवेक।
पुष्पाञ्जलि करते विशद, लेकर पुष्प अनेक।।

''दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत''

घंटाकर्ण स्तोत्र

ॐ घंटाकर्ण महावीर सर्व व्याधि विनाशक।
विस्फोटकं भयं प्राप्तेः रक्ष रक्ष महाबलः।। 1।।
यत्र त्वं तिष्ठसे देव, लिखितोक्षर पंक्ति भिः।
रोगास्तत्र प्रणश्यंति, वात पित्त कफोद्भवाः।। 2।।
तत्र राज भयं नास्ति, यांति कर्णे जपात् क्षयं।
शाकिनी भूत वेताला, राक्षसाः प्रभवंति न।। 3।।
नाकाले मरणं तस्य, न च सर्पेण दृस्यते।
अग्नि चोर भयं नास्ति, ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घंटाकरण नमोस्तुते।। 4।।

ॐ ह्रीं ठः ठः स्वाहा।
इति गौतमौक्त विद्यास्तवनम्।

घंटाकरण जाप्य मन्त्र

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐ महावीर घंटाकर्ण सर्व व्याधि विनाशक विस्फोटक वात पित्तोद्भव कफ रोग चोर लूतादि वृण दोष मपहर ह्रीं घंटाकरण यक्ष नमोस्तुते ठः ठः स्वाहा।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं घंटाकर्ण महावीराय नमोस्तुते मम सर्वकार्य रिद्धिं कुरु सर्व रोगोपद्रव शांतिं कुरु-कुरु ठः ठः ठः स्वाहा

जयमाला

दोहा – माँ त्रिशला के लाड़ले, सिद्धारथ के लाल।
घण्टा कर्ण महावीर की, गाते हैं जयमाल।।

(वेसरी छन्द)

महावीर के यक्ष निराले, सबके संकट हरने वाले।
घंटाकर्ण यक्ष को ध्याएँ, विघ्न दूर सारे हो जाएँ।। टेक।।
गुण के सागर जो कहलाए, विघ्न विनाशक जग में गाए।। घंटा...।।
जो हैं रिद्धि सिद्धि के दाता, देव शास्त्र गुरु से है नाता।। घंटा...।।
भक्ती पापों की क्षयकारी, शांती कारक मंगलकारी।। घंटा...।।
चोर अग्नि का भय नश जाए, व्याधी ना जीवन में आए।। घंटा...।।
शत्रू का भय ना रह पाए, बन्धन कोई हो खुल जाए।। घंटा...।।
आधि व्याधि के रोग विनाशी, सर्व अमंगल के हो नाशी।। घंटा...।।
सम्पत्ती की बढ़ती होवे, दारिद्र पूर्ण रूप से खोवे।। घंटा...।।
स्वजनो का संयोग बनावे, पुत्रादिक संतति को पावे।। घंटा...।।
प्राणी होवे यश का धारी, सर्व जगत होवे उपकारी।। घंटा...।।
महावीर के जो गुण गावे, साथ यक्ष को भी जो ध्यावे।। घंटा...।।
जीवन में नर शांती पावे, अपना वह सौभाग्य जगावे।। घंटा...।।

दोहा – घंटा कर्ण महावीर का, करें जीव जो ध्यान।
सुख शांती सौभाग्य पा, पावें पद निर्वाण।।

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वलक्षण संपूर्ण स्वायुधवाहन–सचिन्ह सपरिवार घंटाकर्ण महावीर यक्षाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – महावीर के साथ में, करें यक्ष का ध्यान।
सर्व सिद्धियाँ प्राप्त हों, बढ़े जगत में शान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्।।

धरणेन्द्र पूजा

स्थापना

पद्मावति के स्वामी हैं जो पार्श्व प्रभू के यक्ष प्रधान।
देव भवन वासी के गाए, है धरणेन्द्र आपका नाम।।
जिन भक्तों के कष्ट निवारी, करने वाले सौख्य प्रदान।
जिन अर्चा के हेतू आओ, आज यहाँ करते आह्वान।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण–स्वायुध–वाहन–वधू चिह्न–सपरिवार हे धरणेन्द्र यक्ष! अत्रागच्छ आगच्छ संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम सन्निहितौ भव भव वषट् सन्निधिकरणं।

(चौपाई छन्द)

निर्मल नीर भराकर लाए, जन्मदिक रुज मम नश जाए।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 1।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय जलं समर्पयामि स्वाहा।

केशर से शुभ गंध बनाए, भवाताप हरने हम आए।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 2।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय चंदनं समर्पयामि स्वाहा।

अक्षत चढ़ा रहे मनहारी, अक्षय पद दायक शुभकारी।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 3।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय अक्षतान् समर्पयामि स्वाहा।

सुरभित पुष्प चढ़ाने लाए, काम रोग मेरा नश जाए।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 4।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय पुष्पं समर्पयामि स्वाहा।

यह नैवेद्य चढ़ाते भाई, क्षुधारोग नाशी शिवदायी।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 5।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा।

धृत के हम शुभ दीप जलाएँ, मोह तिमिर से मुक्ती पाएँ।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 6।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय दीपं समर्पयामि स्वाहा।

अग्नी में हम धूप जलाएँ, आँठों कर्म नाश हो जाएँ।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 7।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय धूपं समर्पयामि स्वाहा।

फल यह सरस चढ़ाते भाई, जो हैं मोक्ष महाफलदायी।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 8।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय फलं समर्पयामि स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए, पद अनर्घ्य पाने हम आए।
हे धरणेन्द्र यहाँ पर आओ, यज्ञ भाग पूजा कर पाओ।। 9।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा – शांतिधारा दे मिले, मन में शांति अपार।
अतः भाव से आज हम, देते शांती धार।।

शान्तये–शांतिधारा

दोहा – पुष्पाञ्जलि करते यहाँ, पाने शिव सोपान।
विशद भाव से आज हम, करते हैं गुणगान।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।।

जयमाला

दोहा – जीते हैं उपसर्ग प्रभु, पारस नाथ जिनेन्द्र।
सेवा में तत्पर रहे, यक्ष सदा धरणेन्द्र।।

(केसरी छन्द)

नाग कुमार सुरों के स्वामी, तुम धरणेन्द्र कहे जग नामी।
सेवक जिन शासन के गाए, तुम अतिशय महिमा दिखलाए।।
चित्रा पृथ्वी है शुभकारी, तीन खण्ड जिसके मनहारी।
प्रथम खण्ड खर भाग कहाया, योजन सहस चुरासी गाया।।
जिसमें भवन अकृत्रिम गाए, जिनगृह शास्वत भी कहलाए।
वास आपका जिसमें गाया, देते सबको शीतल छाया।।
तीर्थंकर कल्याणक पाते, बनकर यक्ष आप तब आते।
होते तुम उपसर्ग निवारी, पावन होते धर्म प्रचारी।।
दुखियों के दुख सारे हरते, भक्तों की सेवा तुम करते।
रोगी के हो रोग निवारी, दुखियों के दुखनाशकारी।।
निर्धन को धनवान बनाते, अज्ञानी को ज्ञान सिखाते।
अतः आपके द्वारे आये, अर्घ्य समर्पित करने लाए।।

दोहा – यक्षराज हम द्वार पर, लेकर आए आस।
सुख शांती सौभाग्य हो, होवे विघ्न विनाश।।

ॐ ओं आं क्रौं ह्रीं धवलवर्ण सर्व लक्षण संपूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्न धरणेन्द्र यक्ष सपरिवार सहिताय जयमाला पूर्णार्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

दोहा – आए आपके द्वार हम, हे नागों के ईश।
सुखी रहें संसार मे, भूपति ऋषी मुनीश।।

।। इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलि क्षिपेत।।

आचार्य 108 श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर थाल सजाकर लाये हैं।
महाव्रतों को धारण कर ले मन में भाव बनाये हैं।।
विशद सिंधु के श्री चरणों में अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु चरणों में सिर धरते हैं।।

ॐ हूँ क्षमामूर्ति आचार्य 108 श्री विशदसागरजी यतिवरेभ्योः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

माँ पद्मावती की पञ्चामृत न्हवन विधि

आसन शुद्धि - ॐ ह्रीं आसन शुद्धिं करोमीति स्वाहा

卐 पद्मावति देवी की स्थापना 卐

पार्श्व प्रभू को शीश पर, पद्मावति बिठाय।
हे माँ तिष्ठो तुम यहाँ, आसन दिया लगाय ॥ १॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति पीठोपरि तिष्ठ तिष्ठ आसन ग्रहण करोमीति स्वाहा ।

देते माँ के शीश पर, पावन जल की धार।
शांति करो संसार में, हे माँ भली प्रकार ॥ २॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी मस्तकोपरि जलधारा करोमीति स्वाहा।

इच्छू रस से मात का, न्हवन कराते आज।
सुख शांती सौभाग्य मय होवे सकल समाज ॥ ३॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी इक्षुरसधारा करोमीति स्वाहा।

शर्करा रस से दे रहे, माँ के सिर पे धार।
सुख शांती मय हो विशद, मेरा ये परिवार ॥ ४॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी शर्करा रस धारा करोमीति स्वाहा ।

फल के रस से दे रहे, माँ के सिर पे धार
सुख शांती मय हो विशद, मेरा भी परिवार ॥ ५॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी फल रस धारा करोमीति स्वाहा ।

नरियल रस से दे रहे, माँ के सिर पे धार।
सुख शांती मय हो विशद, सारा ये संसार ॥ ६॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी नारिकेल रस धारा स्नपनं करोमीति स्वाहा।

माँ पद्मा के शीश पर, देते घृत की धार।
सुख शांती सौभाग्यमय हो, सारा संसार ॥ ७॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी धृत धारा करोमीति स्वाहा ॥

पद्मावति के शीश पर, क्षीर की देते धार।
सुख शांती मय हो विशद, मेरा निज परिवार ॥ ८॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी क्षीर धार करोमीति स्वाहा ॥

देते माँ के शीश पर, पावन दधि से धार।
सुख शांती मय हो विशद, मेरा निज परिवार ॥ ९॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी दधि धारा करोमीति स्वाहा ॥

माँ के सिर पर दे रहे, सर्वौषधि की धार।
सुख शांती सौभाग्यमय हो, मेरा परिवार॥ १०॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी सर्वौषधि धारा करोमीति स्वाहा ॥

गंधानुलेपन कर रहे, माँ का भली प्रकार।
सुख शांती मय हो विशद, मेरा सब परिवार ॥ ११॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी गंधानुलेपन करोमीति स्वाहा ॥

पुष्पवृष्टि करते यहाँ, लेकर पुष्पित फूल।
रक्षपाल या देवियाँ, परिजन हों अनुकूल॥ १२॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी पुष्पवृष्टि करोमीति स्वाहा ॥

मंगल आरती कर रहे, हे माँ तेरे द्वार।
सुख शांती मय हो विशद, मेरा ये परिवार॥ १३॥

इति मंगल आरती अवतरणम् करोमीति स्वाहा।

कलश ढारते शीश पे, माता के हम चार।
सुख शांती मय हो विशद, मेरा ये परिवार॥ १४॥

ॐ आं क्रों ह्रीं पद्मावति देवी चतुः कलशेन धारा करोमीति स्वाहा ॥

दोहा - प्रासुक निर्मल नीर से, देते शांती धार।
यही भावना है 'विशद', होवे धर्म प्रचार॥ १५॥

शान्तये शांतिधारा

शान्तिधारा महादेवी

ॐ नमो भगवते त्रिभुवन वशकरी सर्वाभरण भूषिते पद्मासने, पद्मनयने, पद्ममगन्धिनी, पद्मप्रभो, पद्मकासनी, पद्मवासिनी पद्महस्तो श्रीं ह्रीं कुरु कुरु हृदय मम कार्यं कुरु–कुरु। मम सर्वशांति कुरु–कुरु। मम सर्वराज वश्यं कुरु–कुरु। सर्वलोक वश्यं कुरु–कुरु। सर्वश्री वश्यं कुरु–कुरु। मम सर्वभूतपिशच प्रेतरोधं कुरु–कुरु। , हर–हर, सर्व रोगं छिन्द छिन्द, सर्व विघ्नान् भिन्द–भिन्द, सर्व डाकिनी भयं छिन्द–छिन्द, सर्व शाकिनीं छिन्द–छिन्द, सर्व राकिनी भयं छिन्द–छिन्द, सर्व विषं छिन्द–छिन्द, सर्व क्रूरभयं छिन्द–छिन्द। श्री पार्श्वजिन पादांभोज भृंगि नमो दत्ताय देवी नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रः स्वाहा। सर्व जनराय स्त्री पुरुष वश्यं सर्ववश्यम्–सर्ववश्यम्। ओं आं क्रौं ह्रीं ऐं क्लीं ह्रीं देवी पद्मावती, त्रिपुर कामसाधनी, दुर्जन मतिविनाशिनी, त्रैलोक्य क्षोभिनी श्री पार्श्वनाथोपसर्ग हरणी क्लीं ब्लूं मम दुष्टान् हन–हन मम सर्वकार्याणि साधय–साधय ह्रूं फट् स्वाहा।

ओं आं क्रौं ह्रीं ऐ क्लीं द्यों पद्मे देवी, मम सर्व जगद्वश्यं कुरु–कुरु, सर्वविघ्नान् नाशय–नाशय, पुरक्षोभं कुरु–कुरु ह्रीं सर्वफट् स्वाहा। ओं आं क्रों प्रों ह्रूं ह्रीं क्लीं ब्लूं स ह्म्ल्व्र्यूं पद्मावती सर्व पुरजनान् क्षोभय–2, मम पादयोः पातय–पातय, आकर्षिणी ह्रीं नमः। ओं ह्रीं आं अहं मम पापं फट् दह–दह हन–हन पच–पच पाचय–पाचय ह्रूभं श्रीं क्ष्वीं हंस ष्मंवं भव क्षय हः। क्षां क्षीं क्षूं क्षें क्षैं क्षों क्षौं क्षं क्षः ओं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रः द्रां द्रीं द्रावय–द्रावय नमोऽर्हते भगवते श्रीमते ठः ठः मम श्रीरस्तु पुष्टिरस्तु कल्याणमस्तु स्वाहा।

ॐ आं क्रौं ह्रीं अरुण वर्ण सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन वधू चिह्नसपरिवार नमोऽस्तु–नमोऽस्तु त्रिलोचनी, चतुर्थ भुजा वाली पद्म कटनी धरणेन्द्र भार्या पारस प्रभु की यक्षी देवी मम सर्व यजमान....... ध्येषय सर्वोपि अपमृत्यु दुष्ट ग्रह पीड़ा भूत व्यन्तर पिशाच डाकिनी बाधा रोग शोक सर्वकष्ट हराय शान्ति कराय शान्तिधारा करोमि स्वाहा।

अर्घ

माँ पद्मावति ने किया, जीवों का उपकार।
अतः अर्घ्य अर्पित विशद, करते भली प्रकार।।

ॐ ह्रीं पद्मावती महादेवी अर्घ्यं गृहाण–गृहणं करोमि।

पद्मावती माता का श्रृंगार करावें एवं गोद भरावें

1. वस्त्र साड़ी लंहगा, चोली पहनावें –

आ ओ री सुहागन नारी मंगल गावोरी, पद्मावती माता की गोद भरावोरी। सुन्दर काया माँ की वस्त्र पहनाओ, जयपुर चँदेरी की चुनरी ओढ़ाओरी। अपनी चुनरिया भी खूब सजावोरी, पद्मावती माता की गोद भरावोरी॥

2. आभूषण पहनाओ –

सोने–चाँदी के भूषण माँ को पहनाओं, माला कुण्डल कंकणों से माता को सजाओ। अपने घर की लक्ष्मी को खूब पढ़ाओ, पद्मावती माता की गोद भरावोरी॥

ॐ ह्रीं पद्मावती माताजी को मंगल आभूषण धारण कारयामि।

3. हाथ मे चूड़ियाँ, पाँव में पायल, बिछिया पहनावे, आँख में काजल लगावें–

हाथ माता के चूड़ियाँ पहनाओ, सुन्दर नैनों में कजरा लगाओ। अपनी सुन्दरता खूब बढ़ावोरी, पद्मावती माता की गोद भरावोरी॥

ॐ ह्रीं पद्मावती माताजी को चूड़ी, पायल, बिछिया, काजल धारण कारयामि।

4. बिन्दी माँग भरना –

माथे माता के बिंदिया लगाओ, माँग में उनके सिन्दूर भराओ। अपने सुहाग को अखण्ड बनावोरी, पद्मावती माता की गोद भरावोरी।

ॐ ह्रीं पद्मावती माताजी को बिन्दियाँ लगावे, माँग भरे।

5. मुकुट हार पहनावे एवं मेवा–मिष्ठान्न मेहन्दी व फल से गोद भरावे –

शीश माता के मुकुट पहनाओ, मेवा मिष्ठान्न मिश्री पकवान से गोद भराओ। पुत्र–पौत्रों से अपनी गोदी भरवारो, पद्मावती माता की गोद भरावोरी। ॐ ह्रीं पद्मावती माताजी को मुकुट हार पहनावें मेहन्दी लगाकर मेवा, मिष्ठान्न, फल से गोद भरावे।

सात सुहागिन नारियों से या कम–ज्यादा समयानुसार।

माता के श्रृंगार का सामान

सामान	मात्र	सामान	मात्र
साड़ी	१	नारियल पानी	५
ब्लाऊल पीस	१	हरे फल	सवा किलो
पेटिकोट	१	५ तरह के	
रूमाल	१	मेवा	५०० ग्राम
छोटी पौशाक	१	५ तरह की	
सिन्दूर डिब्बी	१	मिठाई	सवा किलो
बिन्दी पत्ता	१	ढ्ढ५ तरह के	
काजल डिब्बी	१	पान	११
शीशी	१	(डंठल वाले)	
शीशी (कांच)	१	इलायची हरी	५० ग्राम
कंघा	१	लोंग	५० ग्राम
मुकुट छोटा	१	सुपारी साबुत	१०० ग्राम
बिछुड़ी जोड़ी	१	हल्दी साबुत	१०० ग्राम
हार गले का	१	लगा हुआ पान	१
पायजेब जोड़ी	१	दीपक आटे के	५
चुड़ी	१२	सेप्टी पिन गुच्छा	३
नाक की नथ	१	नींबू	५
कान की जोड़ी	१	गुड	आधा किलो
ूल माला	५	चना भीगे हुए	सवा किलो
ूल	५०० ग्राम	(रात्रि को भीगोयें)	
ढ्ढतीन तरह केऋ	१	भोजन थाली	१
मेहन्दी	१ पैकेट	(घर की बनी हुई)	

झूला देवी का

झूला लगवावें व सजावे माताजी को बिठावे झूला दिलावे।
ओ ओरी सुहागन नारी, मंगल गीत गावोरी।
पद्मावती माता को, झूला झूलावोरी॥
सुन्दर झूले में रेशम की डोरी, पलना में माता को बैठाओरी।
सब मिलकर आवो री, पद्मावती को खूब झुलावोरी॥
झूला लगावें।

पद्मावती देवी को गोद अर्पण करना

ॐ आं क्रों ह्रीं मत्र रुपये सर्व विघ्ना हरणाये सकल जन हिताय पद्मावती देव्यै।

1 ॐ आं क्रों ह्रीं....पद्मावती देव्यै जलं समर्पयामि स्वाहा। (स्नान करावें)

2 ॐ आं क्रों ह्रीं......पंचामृतं करोमि स्वाहा। (पंचामृत अभिषेक करें)

3 ॐ आं क्रों ह्रीं......इक्षु दण्डार्चणं करोमि स्वाहा। (गन्ना चढ़ावे)

4 ॐ आं क्रों ह्रीं......द्विव्य चणकार्चणं करोमि स्वाहा। (चना चढ़ावे)

5 ॐ आं क्रों ह्रीं......मधुर भक्ष्यार्चनं करोमि स्वाहा। (नैवेद्य या मिठाई चढ़ावें)

6 ॐ आं क्रों ह्रीं......सद् वस्त्र अर्पणं करोमि स्वाहा। (वस्त्र अर्पण करें)

7 ॐ आं क्रों ह्रीं......षोडश आभरण अर्चनं करोमि स्वाहा। (सोलह श्रृंगार करें) (अंजन, हार, तिलक, चुड़ियाँ चुनड़ी) आदि।

8 ॐ आं क्रों ह्रीं......तिलकार्चनं करोमि स्वाहा। (तिलक लगावें)

9 ॐ आं क्रों ह्रीं......छत्रार्चनं करोमि स्वाहा। (छत्र चढ़ावें)

10 ॐ आं क्रों ह्रीं......चामरार्चनं करोमि स्वाहा। (चमर अर्पण करें)

11 ॐ आं क्रों ह्रीं......स्वर्ण कलशार्चनं करोमि स्वाहा। (स्वर्ण कलश अर्पण करें)

12 ॐ आं क्रों ह्रीं......दर्पणार्चनं करोमि स्वाहा। (दर्पण अर्पण करें)

13 ॐ आं क्रों ह्रीं......पताकार्चनं करोमि स्वाहा। (पताका अर्पण करें)

पद्मावती देवी पूजा विधानम्

पार्श्वनाथं नमस्कृत्य, मोक्षलक्ष्मीनिकेतनम्।
वक्ष्ये पद्मावती पूजां, चतुर्विंशतिस्वांगिकाम्॥

मण्डलं कारयेत् सूरिश्चतुर्विंशतिकोष्ठकाः।
पंचवर्ण महारम्यं, रत्नप्रभसमन्वितम्॥

आदौ गन्धकुटीपूजां पश्चात् श्री गुरु पूजनम्।
देवतापूजनं कुर्याद् धर्मकामार्थसाधनम्॥

बुद्धयेमां कुर्वता पूजां सर्व विघ्नापहारिणीम्।
वांछितार्थाऽखिलं दद्यात् पद्मिनीसुखदायिनी॥

पार्श्वनाथासनंरक्षी फणीन्द्रान्वितशासनी।
यः पूजनं करोत्येव भावभक्तिपरायणः॥

ये लोकाः पूजयन्ति भगवती महति देवि पद्माङ्घ्रीभक्तया।
दंष्ट्रा दाढाकराला जिनपदनिवसिन्युग्रतेजोऽतिमानी॥

तेषां पापं निहन्त्री निरुपमसुखदापुत्रदारादि कल्पा।
दात्री स्वर्गापर्वगान् धरणिधरपति देवनाथादिसेव्या॥

ये पूजयन्ति जिनयक्षदेवीं पूज्या मनः कायवचस्त्रिशुद्धया।
तेषा जनानां सुखदायिका सा पद्मावती सर्वसमीहितानाम्॥

इति पद्मावती पूजा प्रतिज्ञानाय पुष्पांजलिं क्षिपेत्॥

आह्वानस्तवनम्

(आह्वानन तीन बार पढ़े)

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते श्रीमत्पार्श्व चन्द्राय त्रैलोक्य विजयालंकृताय श्यामवर्णधरणेन्द्रनमस्कृताय नीलवर्णाय कर्मकान्तारो– न्मूलनमत्तमतंगजाय संसारोत्तीर्णाय प्राप्तपरमानन्दाय तत्पादार विन्सेवाहेवाकचञ्चरीकोपमे मानवदेवदानवविनम्रमौलि मुकुटमण्डली– मयूखमञ्जरी रञ्जिताङ्घ्रिपीठे!

सेवकजनवाञ्छितार्थं पूरणाधरीकृत– चिन्तामणिकामधेनुकल्पलते! विकसज्जपाकुसुमो–दितार्कपद्मरागारुणदेह प्रभाभासरीकृतसमस्ता– काशदिक्चक्रवाले! लीलानिर्दलितरौद्रदारिद्रयो– पद्रवे! शरणागतत्राणकारीणि! दैत्योपसर्गनिवारीणि! भूतप्रेतपिशाच यक्षराक्षसाकाश जलस्थलदेवता दोषनाशिनि! मातृमद्गलचेटकोग्र– गहणशाकिनी योगिनीवृन्दवेतालरेवती– पीडाप्रमर्दितपरविद्यामन्त्र– यन्त्रोच्छेदिनी! परसैन्य विध्वंसिनी! स्थावर जंगमविषसंहारिणी! सिंह शार्दूलब्याघ्रोरग प्रमुखदुष्टसत्वभयापहारिणि! कासश्वासज्वरभगंदर श्लैष्मवात पित्तकण्डूकामलक्षयोदुम्बर प्रसूतिप्रमुखरोगविध्वंसिनि! चौरानलजलराज ग्रहावच्छेदिन! एकाहिक–द्वयहिक–त्रयाहिक– चातुर्थिक–भौतिकवातिक– सन्निपातिक–पैत्तिकज्वरोच्चाटिनि! त्रिभुवनजनमोहिनि! भगवति! श्री पद्मावती महादेवि! एहि एहि आगच्छ, आगच्छ प्रसादं कुरु कुरु! सर्व कर्म करि श्रीपद्मावती आह्वानस्तवोऽयम्।

पद्मावती की पूजा

श्रीपार्श्वनाथ जिन भक्त परोपकारी।
धरणेन्द्र प्रिय जिननाथ, गुणोपकारी।।
कमठोपसर्ग कृत दूर जिनोपसेवी।
पद्मावती कृत सहाय, सुखोपसेवी॥

ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती देवी अत्रागच्छ–2।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती देवी अत्र तिष्ठ–2।
ॐ आं क्रों ह्रीं हे धरणेन्द्र प्रिये पद्मावती देवी अत्र सन्निहितो भव– भव।

अथ वलयः नैवेद्य चढ़ावें – (1) ॐ पद्मावती देव्यै स्वाहा। (2) पद्मवती परिजनाय स्वाहा। (3) पद्मावती अनुचराय स्वाहा। (4) पद्मावती महत्तराय स्वाहा। (5) अग्नये स्वाहा। (6) अनिलाय स्वाहा। (7) वरुणाय स्वाहा। (8) प्रजापतये स्वाहा। (9) ॐ स्वाहा। (10) भूः स्वाहा। (11) भुवः स्वाहा। (12) स्वः स्वाहा। (13) भूर्भवः स्वाहा। (14) स्वधा स्वाहा।

पद्मावती आह्वानन मंत्र :

ॐ नमोऽर्हले भगवते श्रीमत् पार्श्वचन्द्राय त्रैलोक्य विजयालंकृताय, सुवर्ण वर्ण धरणेन्द्र नमस्कृताय, नीलवर्णाय, कर्मकान्तारोन्मूलन मत्तमत्तङ्गजाय, संसारोतीर्णाय, प्राप्त परमानन्दाय, तत्पादारविन्द सेवा। हे वाक चंचरीकोप मे मानव देव–दानव विनम्र मौलिमुकुट मण्डली मयूख मंजरी रंजितांध्रीपीठं सेवक जन वांच्छितार्थ पूरणाधरीकृतचिन्तामणि कामधेनु कल्पलतेः विकसज्जपा–सुमोदितार्क पद्मरागारुण देह प्रभाभासुरीकृत समस्ताकाशादिक चक्रवाल लीला निर्दलित रौद्र द्रारिद्रयोपद्रवे शरणागत त्राणकारिणी, दैत्योपसर्ग निवारिणी, भूत–प्रेत– पिशाच–यक्ष राक्षसाकाश जल, स्थल देवता, दोष निर्णाशिनी, मातृमुद्गल चेटकोग्र ग्रहण शाकिनी योगिनी वृन्द वेताल रेवती पीड़ा प्रमर्दित परविद्या मंत्र यंत्रोच्छेदिनी, पर सैन्यविध्वंसिनी स्थावर जंगम विष संहारिणी सिंह–शार्दूलव्याघ्रोग प्रमुख दुष्टसत्व भयापहारिणी, कास–श्वास, ज्वर– भगंदर श्लेष्मवातपित्त कंडूकामल क्षयो दुम्बर प्रसूति प्रमुख रोग विघ्यंसिनी, चोरानल जल राजग्रहावच्छेदिनी, एकाहिक द्वयहिक त्रयाहिक चातुर्थिक भौतिक वातिक सन्निपातिक पैत्कि ज्वरोच्चाटिनी, त्रिभवुन जन मोहिनी, भगवती श्री पद्मावती महादेवी एहि एहि आगच्छ आगच्छ प्रसादं कुरु कुरु(वषट्) सर्व कर्म करि (वषट्) मम् सर्वकार्यसिद्धिं कुरु कुरु मम सर्वरोगपद्रवं हूँ फट्।

(इस आह्वानन् मंत्र का स्मरण जब करें, जहाँ देवीजी को आकर्षण करना हो।)

पद्मावती माला मंत्र (लघु)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथाय ह्रीं पद्मावती सहिताय, धरणीरगेन्द्र नमस्कृताय, सर्वोपद्रव, विनाशनाय, परिविद्याच्छेदनाय, परमंत्र प्रणाशनाय, सर्वदोष निर्दलनाय, मम् आकाशान् बंधय–2, पातालान् बंधय–2, देवान् बंधय–2, चाण्डाल ग्रहान् बंधय–2, भगवन क्षेत्रपालदुष्ट ग्रामवासी बंधय–2, डाकिनी बंधय–2, लाकिनी बंधय–2, जाकिनी बंधय–2, ग्रहीत मुक्तकाम बंधय–2, दिव्य योगिनी बंधय–2, वज्र योगिनी बंधय–2, खेचरी बंधय–2, भूचरीम् बंधय–2, नागाद् बंधय–2, वर्ण राक्षसान् बंधय–2, जोटिगान्

बंधय–2, मुग्दल ग्रहान् बंधय–2, व्यंतर बंधय–2, आकाशदेवी बंधय–2, जलदेवी बंधय–2, स्थूलदेवी बंधय–2, गोत्रदेवी बंधय–2, एकाहिक द्वयाहिक त्रायहिक चातुर्थिक नित्य ज्वर, रात्रि ज्वर, सर्वज्वर, मध्याह्न ज्वर, वेला ज्वर, वातिक–पैतिक श्लेष्मिक– सान्निपातिक–सर्वदोष, देव कृत–मानव कृतयंत्रकृत कार्मण उच्छेदय– विस्फोटय–2 मम सर्व दोषान् सर्व भूतान हन–हन दह–दह पच–पच भस्मी कुरु कुरु स्वाहा घे घे हूँ फट् फट्।

पद्मवती माला मंत्र (वृहत्)

ॐ नमो भगवते श्री पार्श्वनाथ धरणेन्द्र सहिताय पद्मावती सहिताय, सर्वलोक ह्रदयानन्द कारिणी, भृंगी देवी सर्व सिद्धिं विद्या विधायिनी, कालिका सर्व विद्यामन्त्र यंत्र मुद्रा स्फेटिनिकरालि सर्व पर द्रव्ययोग चूर्ण मथिनि, सर्व विष प्रभर्जनी देवि। अजितायाः स्वकृत विद्या मंत्र तंत्र योग चूर्ण रक्षिणि, जृम्भे पर सैन्य मर्दिनि, नोमोदानन्द दायिनी, सर्वरोग नाशिनि, सकल त्रिभुवानन्द कारिणी, भृंगी देवी सर्वसिद्धी विद्या विधायिनी महामोहिनी, त्रैलोक्य संहार कारिणि, चामुण्डि ॐ नमो भगवती पद्मावती सर्वग्रह निवारिणी, फट् फट् कम्प कम्प शीघ्र चालय शीर्घ चालय बाहु चालय बाहु चालय गात्रं चालय गात्रं चालय पादं चालय पादं चालय सर्वाङ्गं चालय सर्वाङ्गं चालय लोलय लोलय धुनु धुनु कम्प कम्प कम्पय कम्पय सर्वदुष्टान् विनाशय–2 सर्वदुष्टान् विनाश्य सर्वरोगान् विनाशय सर्वरोगान् विनाशय जये–विजये, अजिते, अपराजिते, जम्भे मोहे स्तम्भे, स्तम्भिनि, अजिते ह्रीं ह्रीं हन हन दह दह पच पच पाचय पाचय चल चल चालय चालय आकर्षय आकर्षय आकम्पय आकम्पय विकम्पय विकम्पय क्ष्मल्व्यूँ क्षां क्षीं क्षूं क्षौं क्षः हूं फट् फट् फट् निग्रह ताडय ताडय क्म्ल्व्यूँ स्रां स्रीं हूं क्रौं क्ष क्षौं क्षः हः हः सः सः धः धः सं सं भम्ल्व्यूँ ह्लूं ह्लूं घर–घर कर–कर ह्लूं ह्लूं फट् फट् ॐ शंख मुद्रया धर धर य्म्ल्व्यूं धर हूं फट् कठोर मुद्रया मारय मारय ग्राहय ग्राहय क्ष्म्ल्वर्यूं हर हर स्वस्तिक मुद्राताडय मुद्रताडय। र्म्ल्व्यूँरं पर र्म्ल्व्यूँ पर प्रज्वल प्रज्वल प्रज्वालय प्रज्वालय धग धग धूमान्धकारिणि रां रां प्रां प्रां क्लीं–2 हः हः वः वः आं नंद्यावर्त मुद्रया त्रासय त्रासय।

क्ष्म्ल्वर्यूं शंख चक्र मुद्रया छिदिं छिदिं भिंदि भिंदि ग्म्ल्वर्यूं गः त्रिशूल मुद्रया छेदय छेदय भेदय भेदय घ्म्ल्वर्यूं धः चन्द्र मुद्रया नाशय नाशय व्म्ल्वर्यूं मुशत मुद्रया

ताडय ताडय पर विद्यां छेदय छेदय पर मंत्र भेदय भेदय घ्म्ल्व्र्यूं धम धम वन्धय वन्धय भेदय भेदय हलमुद्रया पः पः वः वः यं कुरु कुरु व्म्ल्व्र्यूं ब्रां ब्रीं ब्रूं ब्रौं ब्रः समुद्रे मज्जय मज्जय छम्ल्व्र्यूं छ्रां छ्रीं छ्रौं छ्रूं छ्रः अत्राणि छेदय छेदय पर सैन्यमुच्चाटय सैन्यमुच्चाटय पर रक्षां क्षः क्षः क्षः हूं हूं हूं फट् फट् पर सैन्य विध्वंसय विध्वंसय मारय मारय, दारय दारय, विदारय विदारय, गतिं स्तम्भय स्तम्भय भ्म्ल्वर्यूं भ्रां भ्रीं भ्रूं भ्रौं भ्रः श्रवय श्रवय श्रावय श्रावय ट्म्ल्व्र्यूं यः प्रेषय प्रेषय छेदय छेदय द्वेषय द्वेषय विद्वेषय विद्वेषय स्म्ल्व्र्यूं स्रां स्रीं स्रूं स्रौ स्रः क्षावय क्षावय मम रक्षां रक्ष रक्ष[3]पर मंत्र क्षोभय क्षोभय छेद छेद छेदय भेद भेद भेदय भेदय सर्व यंत्र स्फोटय स्फोटय मं मं म्म्ल्वर्यूं म्रां म्रीं म्रूं म्रौं म्रः जृम्भय जृम्भय स्तम्भय स्तम्भय दुःखय दुःखय दुःखाय दुःखाय ख्म्ल्वर्यूं खां खीं खू खौं खः ह्राः ग्रीवां भंजय भंजय मोहय मोहय त्म्ल्व्र्यूं त्रां त्रीं त्रूं त्रौं त्रः त्रासय–त्रासय नाशय नाशय क्षोभय क्षोभय सर्वागं–स्तम्भय स्तम्भय चल चल चालय चालय भ्रम भ्रम भ्रामय भ्रामय धूनय धूनय कम्पय कम्पय आकम्पय आकम्पय भ्म्ल्व्र्यूं स्तम्भय स्तम्भय गमनं स्तम्भ्य स्तम्भय सर्वभूतं प्रमर्दय प्रमर्दय सर्व दिशां बंधय बंधय सर्व विघ्नान् छेदय–2 सर्वभूतं प्रर्मदय–2 सर्व दिशा बन्धय–2 सर्वगमन्तान् छेदय छेदय निकृन्तय निकृन्तय सर्वदुष्टान् निग्राहय निग्राहय सर्व यंत्राणि स्फोटय–2 सर्व शृंखलान् त्रोटय त्रोटय मोटय मोटय सर्व दुष्टान् आकर्षय हम्ल्व्र्यूं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः शान्ति कुरु कुरु तुष्टिं कुरुं तुष्टिं कुरु, पुष्टिं कुरु पुष्टिं कुरु, स्वस्ति कुरु स्वस्ति कुरु, ॐ आं क्रौं ह्रीं ह्रौं ह्रः पद्मावति आगच्छ आगच्छ सर्व भयात् मम रक्ष रक्ष सर्व सिद्धिं सर्व सिद्धिं कुरु सर्व रोगंनाशय सर्व रोगंनाशय। किन्नर किं पुरुष गरुड महोरग गंधर्व यक्ष राक्षस भूत प्रेत पिशाच वेताल रेवती दुर्गा चण्डी कुष्माण्डिनी डाकिनी बन्धं सारय बन्धं सारय। सर्व शाकिनी मर्दय, मर्दय, सर्व योगिनी गण चूर्णय सर्व योगिनी गण चूर्णय, मय मय नृत्य नृत्य गाय गाय कल कल किलि किलि हिलि हिलि मिलि मिलि सुलु सुलु मुलु मुलु कुलु कुलु कुरु कुरु अस्माकं वरदेः पद्मावतीः हन–हन दह दह पच पच सुदर्शन चक्रेण छिंदि छिंदि ह्रीं ह्रीं क्लीं प्लीं प्लं प्लं ह्रां ह्रीं श्रूं ह्रूं भ्रं भ्रूं सूं स्रं ह्रं ग्रीं प्रीं श्रां श्रीं त्रां त्रीं ह्रां ह्रीं प्रां प्रीं प्रूं प्रः पद्मावती धरणेन्द्र माज्ञापयति स्वाहा।

(यह पद्मावती माला मन्त्र पढ़ने मात्र से सिद्ध होता है। नित्य ही दिन में त्रिकाल पढ़े। सर्व कार्य की सिद्धि होती है, भूत प्रेतादि व्याधियाँ नष्ट होती हैं।)

माँ पद्मावती विधान पूजन

स्थापना

पार्श्वनाथ मुनि ध्यान किए थे, तब कमठासुर आया।
ओले सोले पत्थर पानी, क्रोधित हो बरसाया।।
सिर के ऊपर पार्श्व मुनी को, रक्षा कर बैठाया।
रक्षा को धरणेन्द्र ने सिर पे, फण का छत्र लगाया।।
धारणेन्द्र पद्मावति की महिमा, तब से फैली भाई।
विघ्न विनाशक शांति प्रदायक, माँ पद्मा कहलाई।।

ॐह्रीं श्री क्लीं ऐं श्री पार्श्वनाथ भक्त धरणेन्द्रभार्या पद्मावती महा देव्यै अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्, अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्, अत्र मम सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधि करणम् ।।

(वीर छन्द)

प्रासुक नीर समर्पित करने, कलश में भर के लाए हैं।
सुख शांती सौभाग्य जगाने, मात शरण में आए हैं।।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।। 1।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै जलं गृहाण–2 जलं समर्पयामि स्वाहा

मिथ्या मति में भटके भव भव, कितने कष्ट उठाए हैं।।
मन का अब संताप नशाने, मात शरण में आए हैं।
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता।। 2।।

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै चन्दनं गृहाण–2 चन्दनं समर्पयामि स्वाहा।

पुण्य पाप का उदय प्राप्त कर, हमने सुख दुख पाए हैं।
निराबाधा सुख पाने को हम, मात शरण में आए हैं ।।

बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता॥ 3॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै अक्षतं गृहाण-2 अक्षतान् समर्पयामि स्वाहा।

काम रोग के बश में होकर, चारों गति भटकाए हैं।
अब संतोष हृदय में जागे, मात शरण में आए हैं॥
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता॥ 4॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै पुष्पं गृहाण-2 पुष्पं समर्पयामि स्वाहा।

क्षुधा रोग से सतत सताए, शांति नहीं हम पाये हैं।
तृप्ति जगे मेरे मन में अब, मात शरण में आए हैं॥
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता॥ 5॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै नैवद्यं गृहाण-2 नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा।

मोह तिमर से भटके जग में, सम्यक् ज्ञान ना पाएँ हैं।
भेद ज्ञान प्रगटाने को अब, मात शरण में आए हैं॥
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता॥ 6॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै दीपं गृहाण-2 दीपं समर्पयामि स्वाहा ।

अष्ट कर्म ने हमें सताया, पाकर दुख घबड़ाए हैं।
निज में शांति जगाने को हम, मात शरण में आए हैं॥
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता॥ 7॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै धूपं गृहाण-2 धूपं समर्पयामि स्वाहा ।

कर्मों का फल पाकर के हम, आकुलता को पाए हैं।
शिव पथ की अब राह दिखाओ, मात शरण में आए हैं॥
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता॥ 8॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै फलं गृहाण-2 फलं समर्पयामि स्वाहा ।

निज स्वभाव से भ्रमित हुए हम, निज गुण जान ना पाए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ चढ़ाने, मात शरण में आए हैं॥
बाधाएँ भक्तों की सारी, दूर हटाओ हे माता।
रोग शोक सब पाप नशाकर, दो अब जीवन में साता॥ 9॥

ॐ आँ क्रों ह्रीं प्रशस्तवर्णे सर्व लक्षण सम्पूर्ण स्वायुध वाहन चिह्न युत सपरिवारे हे पद्मावती देव्यै अर्घ्यं गृहाण-2 अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा ।

दोहा - शांती धारा के लिए, लाए निर्मल नीर।
मात शरण में लो हमें, पहुँचाओ भव तीर॥

शान्तेय शांति धारा..........

पुष्पाञ्जलि को फूल यह, लाए खुशबूदार।
विशद शांति पाए यहाँ, करो मात उपकार॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि...........॥

जाप :- ॐ आं क्रों ह्रीं ऐं, क्लीं ह्रूँ श्री पदमावती देव्यै मम् सर्वविघ्नोपशांतिं कुरू कुरू स्वाहा॥

जयमाला

सर्व देवियों में रही , रक्षक सर्व प्रधान ।
नाम एक सौ आठ से, गाते हैं जयगान॥

(राधेश्याम छन्द)

जिन शासन की रक्षक देवी, पद्मावती है माँ का नाम।
हंसासनी लोक में प्रचलित, चार भुजा धारी अभिराम ॥

है पाताल निवासी देवी, हैं धरणेन्द्र आपके नाथ ।
जिन शासन की रक्षा करने, में तत्पर रहते द्वय साथ॥
जीवों को जब कष्ट सताए, हो जाते प्राणी असहाय ।
रोग शोक से पीड़ित कोई, प्रेत की बाधा जिन्हें सताय ॥
कोई व्यन्तर बाधाएँ पा, कोई ईति भीति दुख पाय।
कोई निर्धन होके दुखिया, कोई देश विदेशों जाय॥
मॉ की सेवा करते आके, उनको माता बने सहाय।
आश्रय पाने वाला कोई, खाली हाथ कभी ना जाय॥
देव शास्त्र गुरु की श्रद्धानी, माता पद्मावती महान।
जिन शासन की रक्षाकारी , सारे जग में रही प्रधान॥
पार्श्व मुनी पर कमठासुर ने, जब उपशर्ग किया था घोर।
ओले शोले पानी पत्थर, बरसाए थे चारों ओर॥
फण फैला कर माता तुमने, बैठाया था निज के शीश।
जन जन की रक्षक तुमको माँ, कहते जग के सर्व ऋशीष॥
बनकर भक्त आपके माता, आये हैं हम तुमरे द्वार।
जीवन में सुख शांती कारी, माता बनो आप आधार॥
पावन अर्घ्य समर्पित करते, ''विशद'' यहॉ पर हम हे मात!
जीवन जब तक रहे हमारा, आप निभाना मेरा साथ॥

दोहा - रोग शोक भय दीनता, कभी ना आए पास।
सुख शांती सौभाग्य का, नित प्रति होय विकाश॥

ॐ आं क्रों ही श्री पद्मावती देव्यै नमः धरणेन्द्रसहिताय सर्व विघ्न विनाशनाय अर्घ्य स.स्वा.॥

सुरभित लाए पुष्प यह, भरकर पावन थाल।
इस भव के सब दुख मिटें, कटे कर्म का जाल॥

पुष्पाञ्जलिं छिपामि

भेंट समर्पण

दोहा - किया जिनायतन का सदा, तुमने बहु उपकार।
पद्मावति माँ आ यहाँ, भैंट करो स्वीकार।

(चाल छन्द)

जल श्रेष्ठ सुगन्धित लाए, माँ को जो भेंट कराए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी ॥ १॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी पाद्यं समर्पयामि ।

पञ्चामृतादि ये लाए, अभिषेक श्रेष्ठ करवाए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी॥ २॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी पञ्चामृत द्रव्यं समर्पयामि।

यह इच्छु दण्ड शुभ लाए, जो भैंट में यहाँ चढ़ाए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी॥ ३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी इक्षु दण्डार्चनं समर्पयामि।

यह फूले चना मगाए, माँ भैंट में देने लाए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी॥ ४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी चणकार्चनं समर्पयामि।

पकवान के थाल भराए, सब अर्पित करने लाए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी॥ ५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी पक्वान्नार्चनं समर्पयामि।

ये वस्त्र भैंट को लाए, खुश हो तुमको पहराए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी॥ ६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी दिव्य वस्त्रार्चनं समर्पयामि।

मुकुटादिक भूषण लाए, माँ को पहरा हर्षाए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी॥ ७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी षोडषाभरणार्चनं समर्पयामि ।

कुम्कुम के थाल भराए, यह तिलक लगाने लाए।
माँ करते विनय तुम्हारी, मैटो विपदा तुम सारी॥ ८॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी तिलकार्चनम् समर्पयामि ।

(वेसरी छन्द)

छत्र चँवर मंगल द्रव्य लाए, भैंट आपको देने आए।
करते विनय आपकी माता, विघ्न नाशकर दो अब साता॥ ९॥

आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी छत्र चामरादि अर्चनं समर्पयामि ।

शुद्ध नीर से कलश भराए, देने भैंट आपको लाए।
करते विनय आपकी माता, विघ्न नाशकर दो अब साता॥ १०॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी सुवर्ण कलशार्चनं समर्पयामि।

दर्पण स्वच्छ भैंट को लाए, निर्मलता पाने हम आए।
करते विनय आपकी माता, विघ्न नाशकर दो अब साता॥ ११॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी दर्पणार्चानं समर्पयामि।

वस्त्रादिक के ध्वज बनवाए, जिनार्चना करने को आए।
करते विनय आपकी माता, विघ्न नाशकर दो अब साता॥ १२॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी पताकार्चनं समर्पयामि।

नाना विध शुभ वाद्य बजाए, भक्ती करके हम हर्षाए।
करते विनय आपकी माता, विघ्न नाशकर दो अब साता॥ १३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हे पद्मावती देवी वाद्य, नृत्य, गीत, प्रदक्षिणा, नमस्कार विधि।

वसु विध द्रव्यादिक ले आए, अष्ट महानिधि पाने आए।
करते विनय आपकी माता, विघ्न नाशकर दो अब साता॥ १४॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं हे पद्मावति देवी अर्घ्य समर्पयामि।

दोहा - शांती पाने आए हैं, मात आपके द्वार।
अतः भाव से दे रहे, पावन शांती धार॥

शान्तये शांति धारा

दोहा - पुष्पाञ्जलि को पुष्प यह, लाए खुशबूदार।
पूर्ण होय मय कामना, करो एक उपकार॥

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

चौबीस आयुधों के प्रत्येक अर्घ्य भेंट

प्रथम वलयः

मण्डल पर पुष्पाञ्जलि, करते करते लेकर फूल।
यही भावना है विशद, विघ्न होंय निर्मूल॥

(प्रथम वलयोपरि पुष्पाञ्जलि क्षिपामि)

(छन्द मोतियादाम)

'खण्ड्ग' शुभ लिए है अपने हाथ, शोभती है पद्मावति मात।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ १॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं प्रथम हस्ते खड्ग धाारिणी पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

लिए है 'काण्डा' दूजे हाथ, कहाए सारे जग की मात।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ २॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं द्वितीय हस्ते में कांडा युद्ध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

हाथ तीजे में 'मूसलधार', मात करती जग का उपकार।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ३॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं मूसल धारिणी पद्मावती देव्यै देव्यै अर्घ समर्पयामि।

'हलायुध' लिए है चौथे हाथ, निभाए जिन भक्तों का साथ।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ४॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं हे हलायुध धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

'सर्पायुध' लेकर चलती मात, दुष्ट बन्धन करती जो भ्रात।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ५॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं हे सर्पायुध धारिणी पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

बनाया आयुध 'अग्नीमान' रखे जो भक्तों का नित ध्यान।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ६॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं वन्हि आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

'चक्र आयुध' निज कर में धार, करे माँ जन जन का उद्धार।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ७॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं चक्रायुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

'शस्त्र' है शक्ती महिमावान, रखे सद्भक्तों का जो ध्यान।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ८॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं शक्ति आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

धारती 'तारा' आयुध मात, करे जो शत्रु दल का घात।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ९॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं तारा आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

चिन्ह रत्नत्रय का 'त्रिशूल', शत्रु दल जिससे हो निर्मूल।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ १०॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं त्रिशूल आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

चले 'खप्पर' ले अपने हाथ, प्रेम की भिक्षा माँगे साथ।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ ११॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं खप्पर आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

हमेशा 'डमरू' रखती साथ, रखे यह आयुध जो निज हाथ।
करे जो दुष्टों का संहार, शांति का हो जिससे संचार॥ १२॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं डमरू आयुध धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

(दोहा छन्द)

'नाग पाश' को धारकर, होवे नाग स्वरूप।
करे पराजित दुष्ट जो, होवे सुर नर भूप॥ १३॥

ॐ औं क्रौं ह्रीं नागपाश धारिणी हे पद्मावती देव्यै अर्घ समर्पयामि।

शोभित माँ के हाथ में, होता देखो 'दण्ड'।
शांत करे जिससे सभी, प्राणी जो उद्दण्ड॥ १४॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं डण्डायुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

लेकर चलती हाथ में, अपने जो 'पाषाण'।
दुष्ट देखकर के डरें, रखें सदा सम्मान॥ १५॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं पाषाण आयुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'मुद्गर' लेकर हाथ में, चले शान के साथ।
दुष्टों के संहार में, सदा बटाए हाथ॥ १६॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं मुद्गर आयुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'फरसा' लेकर हाथ में, करे दुष्ट संहार।
जिन भक्तों का मात ने, किया सदा उपकार॥ १७॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं फरसा आयुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'कमलायुध' लेकर चले, सोहे माँ के हाथ।
भक्तों को हरदम करे, पद्मावति सनाथ॥ १८॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं कमलायुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'अंकुश आयुध धारकर, चले हमेशा मात।
दुष्ट जनों का मैटती, पूर्ण रूप उत्पात॥ १९॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं अंकुश आयुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'आम्रायुध' से जो करे, शत्रू दल संहार।
विशद भाव से भक्त जन, का करती उद्धार॥ २०॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं हे आम्रायुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'छत्रायुध' से जो करे, रक्षा का शुभ काम।
शत्रू आए सामने, करती काम तमाम॥ २१॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं छत्रायुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'वज्रायुध' है वज्रसम, महिमा का ना पार।
तत्पर रहती भक्ति में, करने को उपकार॥ २२॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं वज्रायुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'वृक्षायुध' से शत्रु दल, कर देती है शांत।
जिन भक्ती में लीन हो, गुण गाए उपरान्त॥ २३॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं वृक्षायुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

'वरदायुध' लेकर चले, दे सबको वरदान।
सद् भक्तों का मात ने, किया सदा कल्याण॥ २४॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं वरदमालायुध धारिणी हे पद्मावति देव्यै अर्घ्यं समर्पयामि।

पूर्णार्घ्य

चौबिस हाथों में लिए, चौबिस आयुध मात।
खुश होके रक्षा करें, भवि जीवों की भ्रात॥ २५॥

ॐ आँ क्रौं ह्रीं चतुर्विंशति भुजा स्थित चतुर्विंशति आयुध सहित हे पद्मावति देव्यै पूर्णार्घ्यं समर्पयामि।

द्वितीय वलय:

दोहा - नाम देवि के जानिए, एक शतक हैं आठ।
अर्चा करते जीव जो, होते ऊँचे ठाठ॥

(द्वितीय वलयोपरि पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)

१०८ नाम के अर्घ्य

रक्षक सर्व देवियों में है, पद्मावती का नाम प्रधान।
'महादेवी' के नाम से माँ का, भक्त करें खुश हो गुणगान।
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महाव्यै यजमानस्य भूत बाधा निवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

'कल्याणी' है नाम आपका, करने वाली जग कल्याण।
नाम आपका जग में सच्चा, रखतीं हो भक्तो का ध्यान॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कल्याणीदेव्यै यजमानस्य शाकिनीबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'भुवनेश्वरी' है नाम आपका, रखती है माँ सबका ध्यान।
अत: भक्त भक्ती से आकर, करते हैं माँ का गुणगान॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भुवनेश्वरीदेव्यै यजमानस्य डाकिनी बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥।

सद्भक्तों को दुष्ट सतावें, उनका करती काम तमाम।
अत: लोक में जाना जाता, 'चण्डेश्वरी' आपका नाम॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चण्डेश्वरीदेव्यै यजमानस्य व्यन्तरबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'कालायनी' है नाम मनोहर, काल भी माने तुमसे हार।
अतिशय कई दिखाए माता, सर्व जगत में अपरम्पार॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री काल्यायिनीदेवीयजमानस्य वैतालबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

गौर वर्ण को धाारण करती, अत: आपका 'गौरी' नाम।
भक्तों की कल्याणक हो तुम, अत: करें वे चरण प्रणाम॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गौर्येदेवी यजमानस्य प्रेतबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

जिन शासन की आप 'सेविका', रहती सेवा में तत्पर।
अत: आपके पास भक्त कई, पा लेते हैं इच्छित वर
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री जिनशासन सेविकादेवी यजमानस्य राक्षसबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।

पञ्चपरमेष्ठी की आराधक, 'पञ्च ब्रह्मपदाराध्यी' नाम।
परमेष्ठी की शरण में माँ का, बना हुआ है पावन धाम॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ८॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचब्रह्मपदाराध्यदेवि यजमानस्य दैत्यबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

‘पञ्च व्रतोपदेशनी’ माता, परमेष्ठी का रखती ध्यान।
कांकिणी बाधा करे निवारण, करती जग जन का कल्याण
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ९॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचव्रतगुणोपेतादेवि यजमानस्य काकिनी कृत बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

पञ्च मंत्रोपदेशनी माँ ने, व्रतियों का कल्याण किया।
देव शास्त्र गुरु के आराधक, भक्तों का भी साथ दिया॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १०॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचमंत्रोपदेशिनीदेवि यजमानस्य शाकिनीबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

‘पञ्च कल्याण दर्शिनी’ देवी, जिनवर के देखे कल्याण।
बाधाओं को दूर हटाये, जैन धर्म की राखे शान॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ ११॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पंचकल्याणदर्शिनीदेवि यजमानस्य लाकिनीबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

नाम ‘तोतिला’ मात आपका, बाधा हरने वाली आप।
अतः आपका भक्त शरण में, आकर करते मन से जाप॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १२॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री तोतिलानामधारिणी यजमानस्य डाकिनीबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

‘नीत्या’ नित्य प्रभू का दर्शन, करने वाली पुण्य निधान।
जिन चरणों में नत मस्तक हो , रखती जिन शासन की शान॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नीत्यादेवीनामधारिणी यजमानस्य भैरव कृत बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

‘त्रिपुरा’ आप तीन लोंकों में, होने वाले सब उत्पात।
अकस्मात बाधाएँ सारी, हरने वाली हो हे मात!॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री त्रिपुरानामधारिणी यजमानस्य भेकसबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

‘काम साधिनी’ नाम आपका, साध रही हो सबके काम।
तत्पर रहती हो सेवा में, लेती नहीं जरा विश्राम॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कामसाधिनीनामधारिणी यजमानस्य लीनस बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयाम स्वाहा॥

‘मदन मादिनी’ आप कहाई, मदकारी जीते कई मल्य।
भक्तों के जीवन की हरती, हे माता तुम सारी शल्य॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मदनोन्मादिनी देवी नामधारिणी यजमानस्य वह्नियः बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

‘विद्यादेवी’ नाम आपका, विद्या का देती हो दान।
विद्यार्थी भी शरण में आके, करते माॅ तेरा गुणगान॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री विद्यादेविनामधारिणी यजमानस्य तस्करबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

‘महालक्ष्मी’ सद्भक्तों को, लक्ष्मी करती आप प्रधान।
आप श्रृंगिणी की बाधा हर, करती भक्तों का कल्याण॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १८॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महालक्ष्मीनामधारिणीयजमानस्य श्रृंगिणीबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

‘सरस्वती’ हे नाम धारिणी, करती हो सद् ज्ञान प्रदान।
सम्यक् श्रद्धा पाने वाली, भक्तों को देती सद् ज्ञान॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ १९॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सरस्वतीनामधारिणीयजमानस्य दंष्ट्रिण बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

‘सारस्वता’ हे नाम धारिणी, पाने वाली सम्यक् ज्ञान।
रेलपादि की बाधा हरिणी, पाने वाली ज्ञान निधान॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २०॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सारस्वतानामधाारिणीयजमानस्य रेलपबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

गण की तुम आधीश कहाई, ‘गणाधीश’ है सार्थक नाम।
पक्षिणी की बाधा हर माता, सेवा करती हो निष्काम॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २१॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गणाधीशनामधारणीयजमानस्य पक्षिबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

‘सर्वगमोपदेशिनी’ माता, देने वाली सद् उपदेश।
जृभंक की बाधा हरती हो, जग जीवों की आप विशेष॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २२॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वागमोपदेशिनी नामधारणीयजमानस्य जृंभकबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

‘जगदम्बा’ है नाम आपका, जग को देती हो तुम प्यार।
जग की बाधा हरने वाली, भक्त करें सेवा शुभकार॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री जगदम्बानामधारिणीयजमानस्य जलबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

‘महादुर्गा’ कहलाती माता, सिंह वाहिनी कहते लोग।
व्याघ्रों की बाधा हरती हो, देने वाली हो सद् भोग॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महादुर्गानामधारिणीयजमानस्य व्याघ्रबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

‘त्रिनेता’ त्रय नेत्र धारिणी, शूकर बाधा हरती मात।
रत्नत्रय की इच्छुक हो तुम, करो धर्म की मॉ बरसात॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री त्रिनेत्रादेवी शूकरबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

प्रभु को फण पर बैठाने से, कहलाई ‘फणि शेखरी’ आप।
कमठ से रक्षा की श्री जिन की, किन्तू दिया नहीं अभिशाप॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री फणशेखरीदेवी मम चित्रकबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

आप शिखारुह इन्दु’ कहाईं, हस्ती की बाधा हर मात।
भक्त आपके द्वारे आकर, विनय सहित द्वय जोड़ें हाथ॥
सुख शांती सौभाग्य जगे माँ, आशा लेकर आए हैं।
अष्ट द्रव्य का अर्घ्य समर्पित, करने को यह लाए हैं॥ २७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री शिखारुहइन्दुदेवी हस्तिबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

चौपाई छन्द

‘कुक्कु दोरग’ वाहिन्ये माता, देने वाली जग को साता।
भूमि बाधा आप निवारी,भक्तों की हो करुणाकारी॥ २८॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कुक्कुटरोगवाहिनीदेवी भूमिपाल बाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

देवी ‘चतुर्मुखी’ कहलाई, चारों ओर देखती भाई।
शत्रुन बाधा आप निवारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ २९॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चतुर्मुखीदेवी शत्रुकृतबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'महापद्मा' माता जग जानी, जग जन की माता कल्यानी।
ग्रामिण बाधा आप निवारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३०॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महापद्मायादेवी ग्रामीणबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

माता कहलाती 'धन देवी', श्री जिन के पद की है सेवी।
दुर्जन बाधा आप निवारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३१॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री धनदेवी दुर्जनबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'गृहेश्वरी' नाम की धारी, माता जन जन की उपकारी।
बाधाओं की आप निवारी,भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३२॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गुहेश्वरीदेवी गोनस बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'नागराज महारानी' जानो, जग की पीड़ाहारी मानो।
रविग्रह पीड़ा आप निवारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नागराजमहादेवी रविग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

देवी कही 'नागिनी भाई', जिसकी सेवा सबने पाई।
ग्रह बाधा हे सोम निवारी,भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नागनीदेवी सोमग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'नाग देवता' हे कल्याणी!, नहीं आप सम कोई मानी।
मंगल ग्रह बाधा परिहारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री नागदेवता देवी मंगलग्रहबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'सिद्धान्त सम्पन्ना' आप हो माता,जग जीवों की ज्ञान प्रदाता।
बुधग्रह बाधा आप निवारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सिद्धांतसंपन्नादेवी बुधग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'द्वादशांग पारयण' देवी, मॉ जिनवाणी की पद सेवी।
गुरुग्रह बाधा आप निवारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री द्वादशांगपरायणादेवीयजमानस्य गुरुग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

'चौदह महा विद्या' की धारी, जैन धर्म की श्रेष्ठ प्रचारी।
ग्रह बाधा हो शुक्र निवारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३८॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री चतुर्दशमहाविद्यादेवीयजमानस्य शुक्रग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

'अवधि ज्ञान लोचन' हे माई, तुमने पाई जग प्रभुताई।
शनि ग्रह की बाधा परिहारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ३९॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री अवधिज्ञाननेत्राम्बा देवीयजमानस्यशनिग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'वासन्ती' है नाम तुम्हारा, लगता सब को प्यारा प्यारा।
राहू ग्रह बाधा परिहारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ४०॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वासन्तीदेवीयजमानस्य राहुग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'वन देवी' वन रक्षा कारी, जीवों की हो संकटहारी।
केतू ग्रह बाधा परिहारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ४१॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री वनदेवीयजमानस्य केतुग्रहबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'वनमाला' कहलाने वाली, माता पद्मा रही निराली।
वृश्चिक बाधा विष परिहारी, भक्तों की करुणाकारी॥ ४२॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं वनमालादेवीयजमानस्य वृश्चिकविष बाधानिवारणार्थं अर्घ्यं सम. स्वा.॥

महेश्वर्य माता कहलाई, जिनको ध्याते हैं सब भाई।
रही सर्व विष बाधा हारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ४३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महेश्वर्यदेवीयजमानस्य सर्वविषबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'महा गौरी' है मात निराली, सबकी पीड़ा हरने वाली।
उदर रोग बाधा परिहारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ४४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महागौरायदेवीयजमानस्य उदररोगबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'महारौद्री' तुमको सब कहते, भक्त शरण में मॉ की रहते।
कण्डु रोग बाधा परिहारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ४५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री महारोंद्रीदेवीयजमानस्य कण्डुरोगबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'भीति मूर्ति' हे मॉ कल्याणी, अल्प मृत्यु जय कही भवानी।
कुष्ट रोग बाधा परिहारी, भक्तों की हो करूणाकारी॥ ४६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भीतिमूर्तिदेवीयजमानस्य कुष्टरोगबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'भयंकरी' माता कहलाई, दुष्ट जीव डरते सब भाई।
भस्मक रोग की है परिहारी, भक्तों की हो करुणाकारी॥ ४७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री भयंकर्यैदेवीयजमानस्य भस्मकरोगबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'कंकाली' जग मात कहाई, जिसकी महिमा जग ने गाई।
कही श्लेष्म बाधा परिहारी, भक्तों की है करुणाकारी।। ४८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कंकालीदेवीयजमानस्य श्लेशमबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
'काल रात्रि' कहलाने वाली, माता है इस जग में आली।
बात रोग बाधा परिहारी, भक्तों की है करुणाकारी।। ४९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री कालरात्रिदेवीयजमानस्य वातबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
नाम आपका है 'गंगाया', सबको देती शीतल छाया।
बाधा पीत निवारण कारी, भक्तों की है करुणाकार।। ५०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गंगायादेवी यजमानस्य पीतरोगबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
हे 'गन्धर्व नायिका' देवी, रहो प्रभू पद के तुम सेवी।
बाधा गुल्म निवारण कारी, भक्तों कि है करुणाकारी।। ५१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं गंधर्वनायिकायजमानस्य गुल्मबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं समपर्यामि स्वाहा।।
'सम्यक् दर्शन शुद्धा' माता, हरो जगत की आप असाता।
पाण्डु रोग बाधा परिहारी,भक्तों की हो करुणाकार।। ५२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सम्यकदर्शनशुद्धादेवीयजमानस्य पाण्डुरोगबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं सम.स्वा.।।
'सम्यक् ज्ञान परायणी' जानो, माता को सद्ज्ञानी मानो।
रोग भगदंर की परिहारी, भकतों की हो करुणाकारी।। ५३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सम्यकज्ञानपरायणादेवी यजमानस्य भंगदरबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं सम.स्वा.।।
'सम्यक् चारित सम्पन्ना' गाई, जग की माता बने सहाई।
माता है क्षय रोग निवारी, भक्तों की है करुणाकारी।। ५४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सम्यक्चारित्रसम्पन्नमाता क्षयरोगबाधानिवारणार्थ अर्घ्यं सम.स्वा.।।
(छन्द मोतियादाम)
कहाए 'नराणाम् उपकार', धर्म का करती विशद प्रचार।
रक्त क्षय रोग निवारी मात,नशाए जो जग का उत्पात।। ५५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं नराणामुपकारायैमाता रक्तक्षयरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
कहाए अगण्य पुण्य सम्पन्न, नहीं रक्षक तुम सम कोई अन्य ।
स्फोटक रोग निवारी मात, नशाए जो जग के उत्पात।। ५६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं अगण्यपुण्यसंपन्नायैमाता स्फोटकरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

मात पाई शुभ 'गणिनी' नाम, बनाए भक्तों के जो काम।
निवारी मरी रोग की मात,नशाए जो जग के उत्पात।। ५७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गणनीमाता मम्मरीरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
रहा 'गण नायिका' पावन नाम, प्रभू के चरणों करे प्रणाम।
निवारी उदर रोग की मात,नशाए जो जग के उत्पात।। ५८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री गणनायिकायैमाता मम्उदरशूलरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
कही 'पाताल वासिनी' मात, करे जो शत्रू दल का घात।
निवारी हृदय रोग की मात, नशाए जो जग के उत्पात।। ५९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पातालवासिनीमाता हृदयरोग निवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
श्रेष्ठ 'पद्मा' है जिसका नाम, बनाए जिन पद में जो धाम।
निवारी मॉ है चक्षू रोग, शरण में आये होय निरोग।। ६०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पद्मावतिदेवीमाता मम्चक्षुरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
मात का 'पद्मास्या' है नाम, बनाए सबके बिगड़े काम।
निवारी है मॉ मुख के रोग, शरण में आये होय निरोग।। ६१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री पद्मास्यायैमाता ममुखरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
कहाए 'पद्म लोचना' मात, करे सद्धर्म की जो बरसात।
निवारी सर्व नाशिका रोग, शरण में आये होय निरोग।। ६२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मलोचनामाता मम् नासिकारोगनिवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
मात का 'प्रज्ञप्ती' हैं नाम,करे जो भक्ति सुबह अरु शाम।
निवारी है मॉ कर्ण के रोग, शरण में आये होय निरोग।। ६३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रज्ञप्त्यैमाता मम् कर्णरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
रोहणी पाया नाम अनूप, भक्त कई जिसके सुर नर भूप।
राज भय करे निवारण मात, नशाए जग के जगे उत्पात।। ६४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री रोहणी माता मम् राजभय निवारणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
श्रेष्ठ है 'जृम्भा' माँ का नाम, करे जिन चरणों नित्य प्रणाम।
रोग भय करे निवारण मात, नशाये जग के जो उत्पात।। ६५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं जृंभामातामममार्गगत भयरोगनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

मात का ‘जया’ बताया नाम, बनाए सबके बिगड़े काम।
उपद्रव अति वृष्टी का होय, मात पद्मा आकर के खोय।। ६६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री जयमातामम् अतिवृष्टिउपद्रव निवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
कहाए ‘स्तंभा’ जग की मात, बने सद्भक्तों की जो नाथ।
नदी गत बाधा कोई होय,मात पद्मा आकर खोय।। ६७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री स्तंभामाता मम् नदीगतबाधा निवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
‘स्तंभनि’ भी है माँ का नाम, शांत जो उपद्रव करे तमाम।
उपद्रव सागर गत जो होय, मात पद्मा आकर के खोय।। ६८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं स्तंभिन्यायै माता ममसरोवरगतउपद्रव निवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
‘योगिनी’ भी माता कहलाय, काम सब जीवों के जो आय।
महा विष की बाधा जो होय, मात पद्मा आकर के खोय।। ६९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री योगीनीमाता मम् महाविषबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
‘योग विज्ञानी’ मात कहाय, भक्त शरणागतआ सुख पाय ।
व्यापार कृत बाधा कोई होय, मात पद्मा आकर खोय।। ७०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री योगविज्ञान्यायैमाता मम् व्यापारकृतउपद्रवनिवारणार्थं अर्घ्यं सम.स्व.।।
‘मृत्यु दारिद्र भंजिनी’ नाम, करे सबके हितकारी काम।
प्राप्त हो स्त्री रत्न महान, मात के शरणागत को आन।। ७१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री मृत्युदारिद्रभंजिनायैमाता मम्स्त्रीरत्नप्राप्तिबाधानिवारणार्थं अर्घ्यं स.स्वा.।।
क्षमा सम्पन्न धारिणी मात, करे नित धर्म की जो बरसात।
प्राप्त हो पुत्र रत्न शुभाकार, करे माँ जग का यह उपकार।। ७२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री क्षमासम्पन्नधरणीमातमम्सुयोग्यपुत्ररत्न प्राप्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
कही सब तीर्थ निवासिनी देवि, श्री जिनवर के पद की सेवि।
मात है सब विवाद जयकार, भक्त वत्सल माँ अपरम्पार।। ७३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्री सर्वतीर्थनिवासनीदेवी यजमानस्य सर्वविवादेजयकरणार्थं अर्घ्यं स.स्वा.।।
श्रेष्ठ ‘ज्वालामुखि’ माँ का नाम, करे शत्रू दल से संग्राम।
मात नाना विद्या दातार, भक्त वत्सल माँ अपरम्पार।। ७४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं ज्वालामुखीदेवी यजमानस्य सर्वनानाविद्याप्राप्त्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वा.।।

‘महा ज्वाला मालिनी’ हे मात, करो सारे विघ्नों का घात।
सर्व विद्युत उपद्रव कर नाश, करो अब चारों ओर प्रकाश।। ७५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं महाज्वालामालिनीदेवीयजमानस्य सर्वविद्युतोपद्रवशांतिकरणार्थ अर्घ्यं सम.स्वा.।।
मात का ‘वज्रश्रृंखला’ नाम, फैलता जिसका सुयश ललाम।।
सर्व दुर्भिक्ष उपद्रव नाश, करो अब चारों ओर प्रकाश।। ७६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं वज्रश्रृंखलादेवी यजमानस्य सर्वदुर्भिक्षोपद्रवशांतकरणार्थ
अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

(सखी छन्द)

है ‘नाग पास धर’ माता, जग की सब हरे असाता।
जो वाक् सिद्धिकर गाई, पावन जग में कहलाई।। ७७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं नागपाशधरादेवी यजमानस्य सर्ववाक्सिद्धिकरणार्थ अर्घ्यं सम.स्वा.।।
‘धुर्या देवी’ जग नामी, जो पावन रही अकामी।
जो सर्व सुश्रुत कर गाई,पावन जग में कहलाई।। ७८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं धूर्यादेवी यजमानस्य सर्वश्रुतज्ञानप्रतकरणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।
माँ ‘श्रोणितान्फलान्वित’, तव रहते प्राणी आश्रित।
तुम सब चिन्तित फलदायी, पावन जग में कहलाई।। ७९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रोणिततानफलान्वितादेवी यजमानस्य सर्वचिंततफलप्राप्तकरणार्थ अर्घ्यं
समर्पयामि स्वाहा।।
माँ ‘हस्ता देवि’ कहाई, जो विघ्न विनाशक गाई।
अपकीर्ति विनाशक माई, पावन जग में कहलाई।। ८०।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं हस्तादेवी यजमानस्य सर्वअपकीर्तिनिरसकरणार्थं अर्घ्यं सम. स्वा.।।
शुभ देवी ‘प्रशस्ता’ जानो, है कष्ट निवारी मानो।
उपद्रव कुटुम्ब विनशाई, पावन जग में कहलाई।। ८१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं प्रशस्तादेवी यजमानस्य सर्वकुटुम्बोपद्रवशांतकरणार्थ अर्घ्यं सम.स्वा.।।
हे ‘विद्या देवी’ हमारी, जो कही सर्व दुख हारी।
संग्राम उपद्रव नाशी, है माता ज्ञान प्रकाशी।। ८२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं विद्यादेवी यजमानस्य सर्वसंग्रामोपद्रवशांतिकरणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.।।

जय श्री 'हस्तिनी' देवी, जिन पद की बन के सेवी।

परकृत आकर्षण नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ८३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हस्तिनीदेवी यजमानस्य सर्वपरकृताकर्षणशांतिकरणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

हे 'हस्ति बाहिनी' माता, भक्तों का तुमसे नाता।

सब परकृत मोहन नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ८४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं हस्तिवाहनीदेवीयजमानस्य सर्वपरकृतमोहनोपद्रवशांतिकरणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'बासन्त लक्ष्मी' माई, भक्तों को बनो सहाई।

वशीकरण दोष की नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ८५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं वासन्तलक्ष्मीदेवीयजमानस्य सर्ववसीकरणोपद्रवशांतकरणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'गीर्वाणी' देवि निराली, कष्टों को हरने वाली।

स्तंभन दोष विनाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ८६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं गीर्वाणीदेवी यजमानस्य सर्वस्तंभन कर्मोपद्रवशांतिकरणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

सर्वाणी देवि कहाए, सबके जो काम में आए।

उच्चारणोपद्रव नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ८७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वाणीदेवीयजमानस्यसर्वउच्चाटनोपद्रव शांतिकरणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

हे 'पद्म विष्टरा' माता, अब मेरी हरो असाता।

मारण शक्ति की नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ८८॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पद्मविष्टरादेवी यजमानस्य सर्वमारणकर्मोपद्रवशांतकरणार्थ अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'वालार्क' देवि कहलाई, जो बाल सूर्य सम गाई।

क्रूर जीवोपद्रव नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ८९॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं बालार्कदेवी कोदण्डकाण्डायुधधारणी यजमानस्य सर्वक्रूरजीवोद्रवशांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'श्रृंगार रस नायिका' माई, तब शरणा जिसने पाई।

थल चारी उपद्रव नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ९०॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रृंगाररसनायिका देवी यजमानस्य सर्वस्थलचरजीवोपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'अनेकान्त तत्त्वज्ञा' माता, है जिन शासन की ज्ञाता।

जल चारी उपद्रव नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ९१॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं अनेकान्ततत्वज्ञा यजमानस्य स्थलजलचर जीवोपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'चिन्तितार्थ फलप्रद' गाई, चिन्तित फल देती माई।

विधिधार्युपद्रव नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ९२॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चिंतितार्थफलप्रदायीदेवी यजमानस्यविविधायुधोपद्रव शांतकरणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'चिंतामणि' माता जानो, करुणाकारी माँ मानो।

पर चक्रोपद्रव नाशी, हे माता ज्ञान प्रकाशी॥ ९३॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं चिंतामणीदेवी यजमानस्यपरचक्रउपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

हे 'कृपा देवि' मनहारी, जो कृपावन्त है भारी।

यजमानस्योपद्रव नाशे, जो सारे दोष विनाशे॥ ९४॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कृपादेवी यजमानस्योपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

मॉ 'पूर्णा देवि' कहाई, जो है इच्छित फलदायी।

संयोग अनिष्ट निवारी, जीवों पे करुणाकरी॥ ९५॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पूर्णादेवी यजमानस्य सर्वअनिष्टसंयोगोपद्रवशांत्यर्थं अर्घ्यं सम.स्वा.॥

(दोहाछन्द)

'पापारम्भ विमोचनी', गाया माँ का नाम।

इष्ट वियोग उपद्रव नशे, शांति मिले अभिराम॥ ९६॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं पापारम्भविमोचनी देवी यजमानस्य इष्टवियोगोपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'कल्पवली' है नाम शुभ, कल्पतरू सम मात।

सर्वदारिद्रोपद्रव नाशती, हरे सभी उत्पात॥ ९७॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कल्पवली यजमानस्य सर्वप्रदापरिद्रोपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'कामधेनु' माता कही, इच्छित फलदातार।

मानसिक दोष निवारती, करती मंगलकार॥ ९८॥

ॐ आं क्रौं ह्रीं कामधेनु यजमानस्य सर्वमानसिकअशांतिशांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

'शुभंकरी' कहते सभी, शुभकर रही महान।
सर्ववाचनिक दोष का, करती है माँ हान।। ९९।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं शुभंकरीदेवी यजमानस्य सर्ववाचकनिक कर्मोपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

'सधर्म वत्सल' आपको, कहते जग के लोग।
'विशद' धर्म का आपसे, मिले श्रेष्ठ संयोग।। १००।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सद्धर्मवत्सला यजमानस्यर्थ कायिकअशांतिउप्रद्रवशांटमर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

'सार्वी' नाम है आपका, रखती सबका ध्यान।
सम्यक्त्वी जो जीव हैं, करें अतः सम्मान।। १०१।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सार्वीदेवी यजमानस्य सर्व भंगीरोगोपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

'सधार्मोत्सव वर्धिनी', माँ है मंगलकार।
धर्म कार्य में भक्त का, करती है उपकार।। १०२।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सद्धर्मोत्सववर्द्धिनी यजमानस्य शीतलारोगोपद्रव शांत्यर्थं अर्घ्यं सम.स्वा.।।

'सर्वपापोशमनी' कही, माता जगत महान।
अर्घ्य समर्पित वे करें, जिनको सद् श्रद्धान।। १०३।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वपापोपशमनी यजमानस्य सर्वक्रोधाग्नि शांत्यर्थं अर्घ्यं सम.स्वा.।।

है 'सब राग निवारणी', माता अतिशयकार।
सम्यक्त्वी जो भक्त हैं, वे बोलें जयकार।। १०४।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सर्वरोगनिवारणी देवी यजमानस्य कामाग्निनिवारणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

'गम्भीरा' कहते जिसे, है अतिशय गम्भीर।
नर नारी स्तुति करें, धारण करके धीर।। १०५।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं गम्भीरा यजमानस्य श्वाँसरोग निवाराणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

'मोही श्री' ने मोह का, कीन्हा है संहार।
सम्यक् दर्शन प्राप्त कर, किया जगत उद्धार।। १०६।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं मोहिनीश्रीदेवी यजमानस्य संग्रहणीरोग निवाराणार्थं अर्घ्यं सम.स्वा.।।

'सिद्धी' देवी आपने, कार्य किये सब सिद्ध।
नाम आपका इसलिए, जग में हुआ प्रसिद्ध।। १०७।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं सिद्धीदेवी यजमानस्य हिचकीरोग निवाराणार्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

'शेफाली तरु वासिनी', सेवा करे अनूप।
जिन भक्ती माँ नित करे, धारण कर कई रूप।। १०८।।
ॐ आं क्रौं ह्रीं शेफालीतरुवासनी यजमानस्य सम्यक्त्वप्राप्यर्थं अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा।।

पद्मावति माँ के रहे, नाम एक सौ आठ।
सद्भक्तों के जो विशद, करती ऊँचे ठाठ ।। १०९।।

शान्तये शांतिधारा, पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

ॐ ह्रीं श्री पद्मावतीदेवी शताष्टक नामसहितायमम् इच्छितफलप्राप्ति कुरू कुरू स्वाहा।।

जाप मंत्र - ॐ आं क्रौं ह्रीं श्रीं क्लीं ब्लीं ब्लूं ब्लः मम सर्वाभीष्ट सिद्धिं कुरु कुरु पद्मावत्यै: नमः स्वाहा। (108 वार जाप्य दीयते)

जयमाला

दोहा - यश फैला त्रय लोक में, माता का चहुँ ओर।
भक्त सदा गुणगान कर, होते भाव विभोर।।

(चाल छन्द)

पद्मावति माता गाई, हंसासनि मात कहाई।
सब विघ्न हरण करतारी, है जन जन की उपकारी।।
भक्तों की पालनहारी, है सारे कष्ट निवारी।
जो सुपथ दिखाने वाली, जिन भक्त कहाए निराली।।
हे रोग शोक हर माता, जग जन को देती साता।
जिन भक्त लोक में भाई, उनको तुम सौख्य प्रदायी।।
प्रभु पार्श्व नाथ का सारा,तुमने उपशर्ग निवारा।
तुमने दिखलाई माया, फण पर प्रभु को बैठाया।।
धरणेन्द्र ने कीन्ही छाया, प्रभु केवलज्ञान जगाया।
सुर नर सब हर्ष मनाए, सब जय जय कार लगाए।।
बौद्धों ने कुम्भ में भाई, तारा देवी बैठाई।
अकलंक से वाद कराया, ना चली कोई भी माया।।
तारा का मान गलाया, जिन धर्म ध्वज फहराया।
निर्णय अन्तिम ये पाया, बौद्धों को आप हराया।।
हे ब्रज्रायुध की धारी, तुम शत्रू दल परिहारी।
त्रिशूल हाथ में धारे, माँ भूत प्रेत संहारे।।

जो भक्त शरण में आते, उनके संकट कट जाते।
धन धान्य सौख्य नर पाते, यश माँ का वे नर गाते॥
तुम सम्यकदर्शन धारी, सम्यक्त्व की रक्षाकारी।
हैं भक्त प्राण से प्यारे, माताको अपने सारे॥

दोहा - निज शक्ती से आपने, किया जगत कल्याण।
मेरी भी बाधा हारो, हे माँ कृपा निधान॥

ॐ ह्रीं क्रौं ह्रीं शतनाम सहित हे पद्मादेवि जयमाला अर्घ्यं समर्पयामि स्वाहा॥

दोहा - अनुरागी जिन धर्म की, माता रही महान।
यही भावना है विशद, बना रहे श्रद्धान॥

॥ इत्याशीर्वाद ॥

आरती पद्मावती माता-1

पद्मावती माता दर्शन की बलिहारियां॥ टेर॥
पार्श्वनाथ महाराज विराजे मस्तक ऊपर थारे।
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र सभी खड़े रहे नित द्वारे॥ 1॥
जो जीव थारो शरणो लीनो सब संकट हर लीनो।
पुत्र पौत्र धन सम्पत्ति देकर मंगलमय कर दीनो॥ 2॥
डाकन शाकन भूत भवानी नाम लेत भग जावे।
वात, पित्त, कफरोग मिटे और तन सुखमय हो जावे॥ 3॥
दीप धूप और पुष्प हार ले मैं दर्शन करने आयो।
दर्शन करके मात तुम्हारे मनवांछित फल पायो॥ 4॥
हम है भक्त तुम्हारे माता पारस के गुण गावें।
हमरी भी सुध लेती रहना जब-जब तुम्हें पुकारे॥ 5॥
जब जब भीर पडी भक्तों पर रक्षा आपने कीन्हीं।
बैरीयों का अभियान तोडकर इज्जत दुगूनी देनी॥ 6॥
ना माँगू में हीरा मोती ना माँगू में चांदी सोना।
मैं माँगू मैया तेरे चरणों में भक्ति का इक कोना॥ 7॥

"क्षेत्रपाल जी की आरती"

(तर्ज : हो जिनवर हम सब उतारे तेरी आरती...)

आज करें हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥ टेक॥
छियानवे क्षेत्रपाल की फैली, इस जग में प्रभुताई-2।
विजय वीर अपराजित भैरव-2, मणिभद्रादिक भाई॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥ 1॥
लाल लंगोट गले मे कंठी, लाल दुपट्टा धारी-2।
सिर पर मुकुट शोभता पावन-2, कर त्रिशूल मनहारी॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥ 2॥
काणों कुण्डल पैर पावटा, माथे तिलक लगाए-2।
बाजू बंद पान है मुख में-2, कूकर वाहन पाए॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥ 3॥
अंगद आदि उपद्रव कीन्हें, तब लंकेश्वर ध्याए-2।
सर्व उपद्रव दूर किया तब-2, अतिशय शांती पाए॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥ 4॥
सम्यक्त्वी तुम भक्त जनों के, सारे संकट हरते-2।
पुत्रादिक धन सम्पत्ति की-2, वाञ्छा पूरी करते॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥ 5॥
आज करें हम क्षेत्रपाल की, आरति मंगलकारी-2।
घृत के दीप जलाकर लाए-2, बाबा तेरे द्वार॥
हो बाबा, हम सब उतारे तेरी आरती...॥ टेक॥

पद्मावती माता की आरती

(तर्ज : भक्ति बेकरार है...)

माता का दरबार है, अतिशय मंगलकार है।
आज यहाँ पद्मावति माँ की, हो रही जय-जयकार है॥ टेक॥
माँ पद्मावति पार्श्वनाथ को, मस्तक ऊपर धारे जी-2।
इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र खड़े हैं, माँ पद्मा के द्वारे जी-2॥
माता का दरबार है...॥ 1॥

जो भी माँ की शरण में आए, वह सौभाग्य जगाए जी-2।
पुत्र-पौत्र धन सम्पत्ति माँ के, दर पे आके पाए जी-2।।
माता का दरबार है...।। 2।।
शाकिन-डाकिन भूत भवानी, की बाधा हट जाए जी-2।
बात-पित्त कफ रोगादिक से, प्राणी मुक्ती पाए जी-2।।
माता का दरबार है...।। 3।।
त्रय नेत्री हे पद्मा देवी, तिलक भाल पे सोहे जी-2।
मुख की कान्ती अनुपम माँ की, भविजन का मन सोहे जी-2।।
माता का दरबार है...।। 4।।
दैत्य कमठ का मान गलाया, सुयश विश्व में छाया जी-2।
आदि दिगम्बर धर्म बताकर, जिनमत को फैलाया जी-2।।
माता का दरबार है...।। 5।।
कुक्कुट सर्प वाहिनी माँ के, सहस्त्र नाम बतलाए जी-2।
मथुरा में जिन दत्तराय जी, रक्षा तुमसे पाए जी-2।।
माता का दरबार है...।। 6।।
दीप धूप फल पुष्प हार ले, आरति करने आए जी-2।
दर्शन करके विशद आपके, मनवांछित फल पाए जी-2।।
माता का दरबार है...।। 7।।

चालीसा पद्मावती

दोहा - अर्हन्तों को नमन कर, सिद्ध प्रभू को ध्याय।
आचार्योपाध्याय साधु के, चरणों शीश झुकाए।।
पार्श्वनाथ की यक्षणी, पद्मावती है नाम।
चालीसा गाते यहाँ, पाने सौख्य ललाम।।

(चौपाई)

श्री जिनके जो दर्शन पाते, पाप कर्म उनके नश जाते।
पार्श्वप्रभू के दरपे आए, सुख शांती सौभाग्य जगाए।।
गजारूढ़ हो पारस स्वामी, गंगा तट पहुँचें शिवगामी।
तपसी कुतप धारने वाला, लक्कड एक आग में डाला।।

नाग युगल जिसमें था काला, था बेचारा जलने वाला।
तपसी को आवाज लगाई, नाग आग में जलते भाई।।
तपसी ने ले हाथ कुल्हाड़ी, जलने वाली लकड़ी फाड़ी।
नाग युगल को उसमें पाया, णमोकार का मंत्र सुनाया।।
नाग देव गति को वह पाए, धरणेन्द्र पद्मावति कहलाए।
एक बार श्री पारस स्वामी, ध्यान मग्न थे अन्तर्यामी।।
धूमकेतु का जीव बताया, कमठ रूप धरकर के आया।
देख पार्श्व को बैर जगाया, जिसके मन में क्रोध समाया।।
ओले शोले पत्थर पानी, अति वृष्टी कीन्हा अभिमानी।
धरणेन्द्र का आसन कम्पाया, अवधि ज्ञान तव देव लगाया।।
कर उपकार याद वह आये, क्षण में जो उपसर्ग हटाये।
पद्मावती ने फण फैलाया, जिस पर प्रभु जी को बैठाया।।
धरणेन्द्र ने फैलाई माया, सिर पे फण का छत्र लगाया।
प्रभु जी केवलज्ञान जगाए, समवशरण तव देव रचाए।।
इन्द्र नरेन्द्र सभी मिल आए, प्रभु की जय जय कार लगाए।
सुयश मात का जग ये गाए, महिमा गाके हर्ष मनाए।।
अद्भुत ज्योति आपने पाई, फीका पड़े चाँद भी भाई।
धर्म स्वरूप रंग है प्यारा, लाल रंग तन का है न्यारा।।
दर्श आपका जो भी पावे, मन उसका अतिशय हर्षावे।
संकट जैन धर्म पर आया, बौद्धों से शास्त्रार्थ कराया।।
बैठ घड़े में तारा आयी, उसने शक्ती खूब दिखाई।
रूप सरस्वति का तुम पाया, कर सहाय अकलंक जिताया।।
जिन शासन का ध्वज फहराया, जैन धर्म जय कार लगाया।
माँ पद्मावती शक्ती शाली, पावन अतिशय करने वाली।।
कर में कमल आपके सोहे, फूल माल उर में मन मोहे।
पैरों में घुंघरू मनहारी, कानों में कुण्डल शुभकारी।।

मुकुट शीश पे माँ के सोहे, तिलक ललाट पे मन को मोहे।
हंस वाहिनी मात कहाए, भक्तों के सब कष्ट मिटाए।।
यश जो माँ का अतिशय गावे, ऋद्धि सिद्धि नव निधियाँ पावे।
धन ऐश्वर्य बुद्धि का धारी, ज्ञान बढ़ावे अतिशय कारी।।
गोद में सुन्दर पुत्र खिलावे, संकट से छुटकारा पावे।
तू ही दुर्गा मात भवानी, कृपा करो हे अम्बा रानी।।
भक्त शरण में मैं बन आया, क्यों माँ तूने मुझे भुलाया।
विशद भावना लेकर आए, माँ उसको सौभाग्य दिलाए।।

दोहा - चालीसा चालीस दिन, पढ़े भाव के साथ।
ऋद्धि सिद्धि ता घर बसे, होय श्री का नाथ।।
धन वैभव सौभाग्य युत, पाए ज्ञान निधान।
रोग शोक से युक्त हो, सुखी बने इन्सान।।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री मूलसंघे कुन्दकुन्दाम्नाये बलात्कार गणे सेन गच्छे नन्दी संघस्य परम्परायां श्री आदिसागराचार्य जातास्तत् शिष्यः श्री महावीरकीर्ति आचार्य जातास्तत् शिष्याः श्री विमलसागराचार्या जातास्तत शिष्याः श्री भरतसागराचार्य श्री विरागसागराचार्याः जातास्तत् शिष्याः आचार्य विशदसागराचार्य आशीर्वादेन जम्बूद्वीपे भरत क्षेत्रे आर्यखण्डे भारतदेशे राजस्थान प्रान्तान्तर्ग जयपुर नगरे पौष मासे शुक्ल पक्षे गुरूवासरे पद्मावति व्रत विधान रचना समाप्त इति शुभं भूयात्।

पद्मावती चालीसा

जिनके केवल दर्शन से ही, पाप कर्म नश जाते हैं।
ऐसे पार्श्व प्रभू चरणों में, हम सब शीश नवाते हैं।।
मरणासन्न नाग-नागिनी को, जब प्रभु मंत्र सुनाते हैं।
स्वर्ग पहुँच पद्मावती अरु, धरणेन्द्र देव बन जाते हैं।। 1।।
चिन्तामणी पार्श्व प्रभु स्वामी, मिल आह्वानन करते हैं।
शत-शत वन्दन ऐसे प्रभु को, सबका संकट हरते हैं।।
जिनकी सेविका पद्मावती बन, चमत्कार दिखलाया है।
धरणेन्द्र देव ने आकर के तव, प्रभु उपसर्ग हटाया है।। 2।।
चिंतामणि श्री पार्श्व प्रभु के, चरणों शीश झुकाता हूँ।
चालीसा पद्मावती माँ का, साहस कर लिख पाता हूँ।।
जय-जय पद्मावती माता तुम, जिन शासनी हंसासिनी हो।
भक्तों के कष्ट निवारण को, संकट मोचन दुख हरनी हो।। 3।।
हे माँ! लखकर रूप तेरा, मन मेरा अति हरषाया है।
कानन कुण्डल सोहे अद्भुत, मुकुट शीश पर प्यारा है।।
अरुण वर्ण और श्रीण वस्त्र शुभ, गले में मोतियन माला है।
अंकुश गदा बिराजे कर में, खड्ग चक्र अति भाला है।। 4।।
तिलक ललाट लाल सम सोहे, मोहिनी मूरति प्यारी है।
चरणारविन्द में पायल सोहे, जिनकी शोभा न्यारी है।।
उपसर्ग देखकर पार्श्व प्रभू का, आकर निज शीश बिठाया है।
शक्ती पायी अद्भुत तुमने, यह देख कमठ घबराया है।। 5।।
केवलज्ञान हुआ प्रभु का जब, तब जय-जयकार हुई भारी।
आ इंद्र रचा फिर समोशरण, अद्भुत महिमा जिसकी न्यारी।।
त्रयलोक में यश छाया माता, तुम सबको ही सुखदायिनी हो।
मन भावनी हो दरशावनी हो, सबकी ही आनंददायिनी हो।।6।।
अकलंक और बौद्ध गुरु का जब, शास्त्र विवाद हुआ भारी।
तारा देवी ने छुपकर के, बौद्धों का साथ दिया भारी।।

बन सरस्वती देवी तुमने, जिन धर्म की जय करवायी है।
घट भीतर बैठी तारा को, तुमने ठोकर दिलवायी है।। 7।।
जब गुणधर सेठ पड़ा संकट में, आ दरिद्रता ने घेरा है।
याद किया माता तुमको जब, बना भक्त वह तेरा है।।
अतुल लक्ष्मी पायी उसने, शरण में तेरी जो आता है।
जिस पर होती कृपा तुम्हारी, सुख वैभव पा जाता है।। 8।।
भूत-प्रेत और यक्ष-पिशाच, सब तुमसे अति भय खाते हैं।
देख भवानी रूप तेरा, सब शत्रु भय से भग जाते हैं।।
चढ़कर के हंस सवारी तुमने, दुष्टों को ललकारा है।
भक्तजनों को सुख पहुँचाया, बोलें सब जयकारा है।। 9।।
हे जगदम्बे! अम्बिके माता पद्मावती जग की माता हो।
शरण पड़ा हूँ आन मैं तोरी, तुम ही सब कुछ दाता हो।।
हे माता पद्मावती देवी, अब आके आन उबारो तुम।
'मुन्शी' शरणागत है तोरी, नौका अब पार लगाओ तुम।। 10।।